"दैनिक" कारखाने का सफर, अखबार के समस्त पाठकों को होली के पावन पर्व पर हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं..

दैनिक कारखाने का सफर कार्यालय में 4 मार्च को अवकाश के कारण अगला अंक 6 मार्च शुक्रवार को आएगा।
संपादक

दैनिक कारखाने का सफर

वर्ष 6, अंक 262 | भोपाल, बुधवार 4 मार्च, 2026 | चैत्र कृष्ण पक्ष,प्रतिपदा, 2082 | मूल्य 2 रुपए

हेम्टू इंटक के प्रांगण में धूम धाम से मनाया गया होली मिलन समारोह

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आपसी भाई चारे एवं रंग बिरंगे रंगो का त्योहार होली बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में बी एच ई एल के सैकड़ो कर्मचारियों की उपस्थिति में होली मिलन समारोह मनाया गया। इंटक के मीडिया प्रभारी सी आर नामदेव ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कार्यपालक निदेशक महोदय पी के उपाध्याय ,महाप्रबंधक मानव संसाधन टी यू सिंह, एच आर पटेल, महाप्रबंधक एस सी आर, आरिफ सिद्दकी अपर महाप्रबन्धक एच आर डी सी, वरिष्ठ पत्रकार एम एम द्विवेदी, आनंद सक्सेना उपस्थित हुए एवं समस्त कर्मचारियों को होली की शुभकामनाए दी। इस पावन पर्व के अवसर पर यूनियन के अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने भेल भोपाल के समस्त कर्मचारियों को होली की बधाई एवं शुभकामनाए दी। इस मौके पर ईडी ने कहा कि बीएचईएल भोपाल एवं यहाँ के कर्मचारी निरंतर उन्नति करते रहे रंगो का त्यौहार उनके जीवन में खुशिया लेकर आये। यूनियन के महामंत्री अजित गोंड एवं कोषाध्यक्ष मिथिलेश तिवारी ने आये हुए सभी अतिथियों का गुलाल लगाकर स्वागत किया एवं शुभकामनाये दी। इस अवसर पर सैकड़ो की संख्या कर्मचारी उपस्थित हुए जिसमे मुख्य रूप से यूनियन के अध्यक्ष राजेश शुक्ला ,अजीत कुमार गोंड महामंत्री,मिथलेश तिवारी कोषाध्यक्ष,श्री राम राज तिवारी, श्री जी पी तिवारी, के पी द्विवेदी, अशोक शर्मा, जे के पाठक, राहुल त्रिपाठी ,के एल श्रोती, सी आर नामदेव मीडिया प्रभारी,फजल खान,धर्मेंद्र अवस्थी,प्रदीप मालवीय,सतेंद्र शर्मा, सी एम साहू, चंद्रावत,सुरेश मेहरा,ललित रायचंदानी,अजय राठिया,चंद्रमणि,प्रवीण भरथरे,अमलेश बोरासी,विजेंद्र नाग,अंकुश मंडल,अशीष पवार, इंद्रेश तिवारी, कपिल पुरोहित,रहीश चौरसिया,शिवेंद्र मिश्रा,संतोष मीना,रामभुवन विश्वकर्मा,रंजीत रजक,गजानंद देशमुख,पवन कछावा,कमलेश चौरसिया,मदन मोहन पांडे,मंजीत,राजदीप,रामसिंह राठौर,सुभाष पवार,दया ग्वाले,सुरेंद्र मकवाना,एवं सैकड़ो भेल कर्मचारी उपस्थित थे।

सारिका की पहल, टेलिस्कोप से दिखाया अदभुत चंद्रग्रहण

आंशिक ग्रहण शाम 6 बजकर 47 मिनिट तक रहा तो उपछाया ग्रहण की अवधि 7 बजकर 53 मिनिट तक रही

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नेशनल अवार्ड प्राप्त विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने मंगलवार शाम हुये इस साल के पहले चंद्रग्रहण को टेलिस्कोप के माध्यम से दिखाया और इसके वैज्ञानिक तथ्यों को समझाया। उन्होंने बताया कि सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी आने से यह खगोलीय घटना होती है, जिसे बिना किसी चश्मे के आंखों से देखना पूरी तरह सुरक्षित है, लेकिन टेलिस्कोप से इसका नजारा और भी स्पष्ट दिखता है। होली के अवसर पर हुये इस चंद्र ग्रहण के समय चंद्रमा पृथ्वी से लगभग 3 लाख 80 हजार किमी दूर था और ग्रहण के समय पृथ्वी की छाया के कारण चंद्रमा ब्लड मून के रूप में तामिया लाल रंग का दिखाई रहा था । आंशिक चंद्रग्रहण शाम 6 बजकर 47 मिनिट तक चला इसके बाद शाम 7 बजकर 53 मिनिट तक की अवधि के लिये उपछाया ग्रहण आरंभ हुआ ।उपछाया ग्रहण की धार्मिक मान्यता नहीं रहती है । लेकिन वैज्ञानिक रूप से चंद्रमा जब उपछाया में रहता है तो सूर्य का पूरा प्रकाश नही मिलता है जिससे यह पीला दिखता रहता है। सारिका ने बताया कि खगोलीय दृष्टिकोण से यह एक अद्भुत नज़ारा था जिसे बेहतर बनाने के लिए टेलिस्कोप का इस्तेमाल किया गया।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

वैश्विक उथल-पुथल का दौरः क्या भारत आने वाले आर्थिक और ऊर्जा तूफ़ान के लिए तैयार है ?

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

युद्ध, ऊर्जा संकट, मंदी और तकनीकी प्रतिस्पर्धा के बीच दुनिया अस्थिर — यदि हालात नहीं संभले तो भारत पर गहरा असर संभव।

दुनिया इस समय एक असामान्य दौर से गुजर रही है। महाशक्तियों के बीच बढ़ता तनाव, युद्ध की लंबी होती स्थितियाँ, ऊर्जा बाजार में अस्थिरता, और वैश्विक अर्थव्यवस्था की धीमी रफ्तार—ये सभी संकेत बताते हैं कि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था संतुलन खो रही है। सवाल यह है कि यदि यह अस्थिरता नियंत्रित नहीं हुई, तो भारत जैसे तेजी से उभरते देश पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है?

ऊर्जा संकट - सबसे बड़ी चिंता- भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का लगभग 80% से अधिक कच्चा तेल आयात करता है। यदि मध्य-पूर्व या अन्य तेल उत्पादक क्षेत्रों में संघर्ष गहराता है, या समुद्री मार्गों में बाधा आती है, तो तेल की कीमतों में तेज़ उछाल आ सकता है।

इसका सीधा असरः
- पेट्रोल-डीजल की कीमतों पर
- परिवहन लागत पर
- खाद्य और रोजमर्रा की वस्तुओं की महंगाई पर
- औद्योगिक उत्पादन लागत पर

यदि वैश्विक आपूर्ति कुछ समय के लिए भी बाधित होती है, तो भारत को आर्थिक दबाव झेलना पड़ सकता है। ऊर्जा सुरक्षा अब केवल आर्थिक नहीं, बल्कि रणनीतिक मुद्दा बन चुकी है।

वैश्विक मंदी का खतरा : अमेरिका और यूरोप में ब्याज दरों में वृद्धि, चीन की धीमी अर्थव्यवस्था, और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में गिरावट के संकेत वैश्विक मंदी की आशंका को बढ़ा रहे हैं। यदि विकसित देशों में मांग घटती है, तो भारत के निर्यात पर असर पड़ेगा।

संभावित प्रभावः
- आईटी और सेवा क्षेत्र पर दबाव
- ऑटोमोबाइल और मैन्युफैक्चरिंग में सुस्ती
- विदेशी निवेश में कमी
- रोजगार के अवसरों में गिरावट

भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत है, लेकिन वैश्विक बाजार से पूरी तरह अलग नहीं है। बाहरी झटकों का असर सीमित हो सकता है, पर शून्य नहीं।

आपूर्ति श्रृंखला और व्यापार जोखिम : कोविड काल ने दिखाया कि सप्लाई चेन कितनी संवेदनशील हो सकती है। यदि भू-राजनीतिक तनाव बढ़ता है और व्यापारिक मार्ग बाधित होते हैं, तो इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, कच्चा माल और आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है।

उद्योगों में उत्पादन रुकावट और कीमतों में वृद्धि का खतरा बढ़ सकता है।

तकनीकी प्रतिस्पर्धा - भविष्य की लड़ाई : आज की दुनिया में युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि तकनीक में भी हो रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), सेमीकंडक्टर, रक्षा तकनीक और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा तीव्र है।

यदि भारत नेः
- घरेलू विनिर्माण को मजबूत नहीं किया
- अनुसंधान और विकास (R&D) में निवेश नहीं बढ़ाया
- युवाओं को उन्नत कौशल नहीं दिया तो भविष्य में तकनीकी निर्भरता बढ़ सकती है।

भारत के लिए रास्ता क्या है?

हालात गंभीर हैं, लेकिन निराशाजनक नहीं। भारत के पासः
- युवा जनसंख्या
- विशाल घरेलू बाजार
- बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था
- स्थिर लोकतांत्रिक ढांचा

यदि सरकार और उद्योग मिलकर ऊर्जा विविधीकरण, स्थानीय उत्पादन, निर्यात विस्तार और तकनीकी आत्मनिर्भरता पर ध्यान दें, तो यह संकट अवसर बन सकता है।

निष्कर्षः सतर्कता ही सुरक्षा है :

दुनिया में बढ़ती अस्थिरता हमें यह संकेत दे रही है कि आत्मनिर्भरता और रणनीतिक तैयारी अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता हैं। यदि वैश्विक हालात बिगड़ते हैं, तो भारत पर प्रभाव दिख सकता है—चाहे वह महंगाई के रूप में हो, निवेश में गिरावट के रूप में या रोजगार पर दबाव के रूप में।

लेकिन यदि भारत समय रहते मजबूत नीति, संतुलित कूटनीति और आर्थिक अनुशासन अपनाता है, तो आने वाला दौर देश को और अधिक सशक्त बना सकता है। आज जरूरत घबराहट की नहीं, बल्कि तैयारी की है। दुनिया बदल रही है — और भारत को इस बदलाव के लिए तैयार रहना होगा।

भेल सीटू ने हर्षोल्लास के साथ मनाया होली मिलन समारोह

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

रंगों के महापर्व होली की पूर्व संध्या पर भेल गेट क्रमांक 5 पर आयोजित होली मिलन समारोह में सैकड़ों की संख्या में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कर्मचारियों ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं और आपसी प्रेम, भाईचारे एवं एकता का संदेश दिया।

कार्यक्रम में भेल भोपाल के कार्यपालक निदेशक पी. के. उपाध्याय तथा महाप्रबंधक (मानव संसाधन) टी. यू. सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। दोनों वरिष्ठ अधिकारियों ने यूनियन पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों को होली की शुभकामनाएं देते हुए संगठनात्मक सौहार्द और सहयोग की भावना को और मजबूत करने का संदेश दिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से वरिष्ठ पत्रकार एम एम द्विवेदी व आनंद सक्सेना के साथ ही दीपक गुप्ता, लोकेन्द्र शेखावत, विनय सिंह, कुलदीप मौर्य, राजेश रजक, कौशल वामने, राजू आर्मो, गया प्रसाद, सतीश सालवी, गोपाल गुप्ता, नितिन अकोदिया, योगेंद्र देशवाली, एस पी चौहान एवं अन्य पदाधिकारी व सैकड़ों भेल कर्मचारी शामिल हुए। समारोह सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ और कर्मचारियों में विशेष उत्साह देखने को मिला।

तेहरान के मेहराबाद एयरपोर्ट पर भारी बमबारी, नेतन्याहू ने दी और भीषण हमलों की चेतावनी

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

ईरान की अर्ध-सरकारी समाचार एजेंसी 'मेहर' (Mehr) के अनुसार, "अमेरिकी-जायोनी आतंकवादियों" ने हवाई अड्डे के पश्चिमी हिस्से और रनवे के पास के इलाकों को निशाना बनाया। सोशल मीडिया और स्थानीय मीडिया द्वारा जारी तस्वीरों में हवाई अड्डे के भीतर से गहरा काला धुआं उठता देखा गया। अपुष्ट रिपोर्टों के अनुसार, रनवे पर खड़े एक नागरिक विमान (Airbus A319) को भी क्षति पहुँची है। मेहराबाद ईरान का सबसे व्यस्त घरेलू हवाई अड्डा है और इसका उपयोग सैन्य रसद (Logistics) के लिए भी किया जाता है। इसकी शहर के केंद्र से नजदीकी इसे बेहद संवेदनशील बनाती है।

इज़राइली प्राइम मिनिस्टर बेंजामिन नेतन्याहू ने कन्फर्म किया कि इज़राइली सेना ईरानी और लेबनानी एयरस्पेस में एक्टिवली ऑपरेशन कर रही है, और इस कैंपेन को एक लगातार और बढ़ता हुआ प्रयास बताया। नेतन्याहू ने मंगलवार को सेंट्रल इज़राइल में एक एयर फ़ोर्स बेस से दिए गए एक बयान में कहा, "हम ईरान पर ज़ोरदार हमला करते रहेंगे। हमारे पायलट ईरान और तेहरान के आसमान पर और लेबनान के आसमान पर भी नज़र रखे हुए हैं।" उन्होंने ईरान के सपोर्ट वाले लेबनानी ग्रुप हिज़्बुल्लाह पर भी निशाना साधा और आगे और भी कड़े जवाब की चेतावनी दी। उन्होंने कहा, "हिज़्बुल्लाह ने हम पर हमला करके बहुत बड़ी गलती की। हमने पहले ही ज़ोरदार जवाब दिया है, और हम और भी ज़्यादा ज़ोरदार जवाब देंगे।"

पश्चिमी तेहरान में मौजूद मेहराबाद एयरपोर्ट, पहले से ही देश का मुख्य डोमेस्टिक एविएशन गेटवे रहा है। यह ईरानी राजधानी को सर्विस देने वाले सिर्फ़ दो बड़े एयरपोर्ट में से एक है, दूसरा इमाम खुमैनी इंटरनेशनल एयरपोर्ट है, जो ज़्यादातर इंटरनेशनल ट्रैफ़िक को हैंडल करता है। नेतन्याहू ने ईरान के साथ-साथ लेबनान स्थित हिजबुल्लाह को भी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि हिजबुल्लाह ने इजरायल पर हमला करके "बड़ी गलती" की है और अब उन्हें इसका और भी भयानक अंजाम भुगतना होगा।

होली का पारंपरिक वैभव

राजधानी में निकलेगा भव्य चल समारोह : दयानंद चौक से जनकपुरी तक गूँजेगा उत्सव

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

धर्म, संस्कृति और परंपरा की जीवन्त धारा को आगे बढ़ाते हुए श्री हिंदू उत्सव समिति (रजि. 63) भोपाल के तत्वावधान में दिनांक 04 मार्च 2026, बुधवार को भव्य एवं ऐतिहासिक होली चल समारोह का आयोजन किया जाएगा। समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया कि श्री हिंदू उत्सव समिति द्वारा आयोजित यह पारंपरिक चल समारोह प्रातः 10:00 बजे दयानंद चौक से आरंभ होकर घोड़ा निक्कास, मंगलवारा जैन मंदिर, इतवारा, इलेक्ट्रॉनिक मार्केट, चौकी चौक, सावरकर चौक, लखेरापुरा, भवानी चौक, सिंधी मार्केट से होते हुए जनकपुरी पर अपने उल्लासपूर्ण समापन तक पहुँचेगा।

रंग और उमंग से सजा यह विराट आयोजन केवल एक जुलूस नहीं, बल्कि सनातन परंपराओं की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का उत्सव होगा। चल समारोह में सुसज्जित झाँकियाँ, उत्साहवर्धक डीजे, पारंपरिक ढोल-ताशे, आकर्षक डुल-डुल घोड़ी, भव्य बग्घियाँ तथा रंगों से सराबोर करने वाले टैंकर विशेष आकर्षण का केंद्र रहेंगे। मार्ग के दोनों ओर श्रद्धालुजन और नगरवासी इस उत्सव की छटा का साक्षी बनेंगे।

उल्लेखनीय है कि 3 मार्च को ग्रहण होने के कारण इस वर्ष होली का पारंपरिक चल समारोह 4 मार्च को आयोजित किया जा रहा है, ताकि परंपरा और आस्था की मर्यादा अक्षुण्ण बनी रहे।

राजधानी भोपाल एक बार पुनः रंग, समरसता और उत्सवधर्मिता के अद्भुत संगम का साक्षी बनने जा रही है। समिति ने समस्त धर्मप्रेमी नागरिकों से उत्साहपूर्वक सहभागिता की अपील की है। साथ ही समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने भावनात्मक अपील की है की होली का त्योहार मस्ती का त्यौहार है खूब रंग खेलो लेकिन किसी भी तरह का मादक पदार्थों का सेवन न करें । जिससे हमारे त्यौहार की गरिमा अक्षुण्ण बनी रहे ।

जब रंग उड़ते हैं तो कई बार सच भी हवा में तैरने लगता है

बुरा ना मानो भाई होली है... होली के रंग में `कटप्पा´ का चरित्र उजागर कच्चे धागों से समाज सुधार की ठेकेदारी!

प्रमोद गुप्ता। सारनी

होली का पर्व केवल रंग-गुलाल और हुड़दंग का नहीं,बल्कि समाज के चेहरों से उतरते नकाबों का भी त्योहार माना जाता है।जब रंग उड़ते हैं तो कई बार सच भी हवा में तैरने लगता है। इन दिनों क्षेत्र में कुछ ऐसा ही दृश्य देखने को मिल रहा है, जहाँ खुद का चरित्र कच्चे धागे जैसा होने के बावजूद दूसरों के वस्त्रों पर कीचड़ खोजने की होड़ मची हुई है।

विडंबना यह है कि जिनके दामन स्वयं दागदार हैं,वही नैतिकता की पाठशाला खोलकर समाज सुधारक बनने की मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं। कहावत भी है आदत सुधरी नहीं और समाज सुधारने चले हैं। ठीक इसी तर्ज पर क्षेत्र में लेखन और आरोपों की ऐसी होली खेली जा रही है,जिसमें शब्दों से ज्यादा व्यक्तिगत कटाक्षों की पिचकारियाँ चल रही हैं।कुछ स्वयंभू पात्र अपने आप को किसी महागाथा के 'कटप्पा' की भूमिका में स्थापित करने की कोशिश करते नजर आ रहे हैं।मगर जैसे ही पैरों तले जमीन खिसकने लगी,उन्हें अचानक गुरु-धर्म और नैतिकता का स्मरण हो आया।सवाल यह उठता है कि जब व्यक्तिगत चरित्र पर प्रहार किए जा रहे थे,तब यह धर्म और मर्यादा कहाँ विश्राम कर रही थी?क्षेत्र में अब हालात ऐसे बनते दिख रहे हैं कि खबरों की दुनिया में तथ्य कम और व्यक्तित्वों की खोज अधिक होने लगी है।अभी घटनाओं का प्रारंभिक दौर भी पूरी तरह शुरू नहीं हुआ, मगर नई खबरिया तलाशने की जल्दबाजी ने

कई चेहरों को कठघरे में खड़ा कर दिया है।मादक पदार्थों से जुड़े विवाद हों,तलवारबाजी के चर्चित प्रसंग हों या सामाजिक-प्रशासनिक गतिविधियों के उलझे धागे यदि इन सबको जोड़कर देखा जाए तो तस्वीर कुछ और ही कहानी कहती नजर आती है। समाज का सिद्धांत भी स्पष्ट है। जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे।जब कोई स्वयं को न्याय का दूत, यमराज या जल्लाद मानकर दूसरों के फैसले लिखने लगता है,तब वक्त भी अपना फैसला सुरक्षित रखता है। शायद इसी सत्य को मशहूर शायर राहत इंदौरी की पंक्तियाँ बखूबी बयान करती हैं।बन के एक हादसा बाज़ार में आ जाएगा,जो नहीं होगा वो अख़बार में आ जाएगा।

चोर-उचक्कों की करो कद्र कि मालूम नहीं,कौन कब किस सरकार में आ जाएगा : आज हालात ऐसे हैं कि इस कथित 'कटप्पा' के चारों ओर मानो फिल्मी संवादों की गूंज सुनाई दे रही है।आगे क्या होगा,यह भविष्य के गर्भ में छिपा है,लेकिन समाज की स्मृति लंबी होती है और समय सबसे बड़ा संपादक साबित होता है।होली के इस मौसम में रंगों से ज्यादा चरित्रों की परतें खुल रही हैं और शायद यही इस उत्सव का सबसे गहरा व्यंग्य भी होने की संभावना से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। खैर मामला जो भी हो लेकिन सारणी से सागर की गहराई तक यदि लोकार्पण या लोक दर्पण पर चर्चा की जाए तो शीशा साफ मिलेगा लेकिन चेहरे पर कई कालिक पुती दिखाई नहीं देगी।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय
गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

25 जिलों में तापमान 33 के पार, मध्यप्रदेश में मालवा-निमाड़ सबसे गर्म... होली पर गर्म रहेंगे भोपाल-इंदौर

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मार्च की शुरुआत में ही मध्य प्रदेश में गर्मी असर दिखाने लगी है। खासकर मालवा-निमाड़ यानी, इंदौर और उज्जैन संभाग के जिलों में दिन का टेम्परेचर बढ़ रहा है। मंगलवार को प्रदेश के 35 जिलों में अधिकतम तापमान 33 डिग्री के पार पहुंच गया। इनमें धार, नर्मदापुरम, खरगोन, खंडवा और रतलाम सबसे गर्म रहे। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार को धार में 35.9 डिग्री, नर्मदापुरम में 35.4 डिग्री, खरगोन में 35.2 डिग्री, खंडवा में 35.1 डिग्री और रतलाम में पारा 35 डिग्री दर्ज किया गया।

वहीं, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, जबलपुर, शाजापुर, गुना, टीकमगढ़, दमोह, सागर, सतना, मंडला, छतरपुर, सिवनी, उमरिया, सीधी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा और रायसेन में तापमान 33 डिग्री या इससे अधिक दर्ज किया गया। मौसम विभाग की माने तो अगले 4 दिन के अंदर प्रदेश में अधिकतम तापमान 2 से 4 डिग्री तक बढ़ेगा। ऐसे में संभावना है कि मार्च के पहले ही पखवाड़े में प्रदेश में पारा 40 डिग्री तक पहुंच जाएगा। हालांकि, एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस की वजह से बारिश होने के आसार है।

होली पर तेज धूप खिलेगी मौसम विभाग के अनुसार, होली के दिन बुधवार को पूरे प्रदेश में तेज धूप खिली रहेगी। कहीं भी बारिश या बादल छाने के आसार नहीं है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और उज्जैन में तापमान 35 डिग्री के पार पहुंच सकता है। दिन के साथ रातें भी गर्म प्रदेश में दिन के साथ रातें भी गर्म हो गई हैं। सोमवार-मंगलवार की रात में जबलपुर, सागर, सिवनी, टीकमगढ़, नरसिंहपुर, गुना, धार, नर्मदापुरम, खंडवा, खरगोन, रतलाम और श्योपुर में न्यूनतम तापमान 16 डिग्री या इससे ज्यादा रहा। इनमें धार में सबसे ज्यादा 18.5 डिग्री, नर्मदापुरम में 18.4 डिग्री और खंडवा में 18 डिग्री दर्ज किया गया।

मार्च में लू का असर नहीं, अप्रैल-मई में चलेगी मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, अबकी बार अप्रैल और मई में हीट वेव यानी, लू चलेगी। 15 से 20 दिन तक लू चल सकती है, लेकिन मार्च में लू चलने का अलर्ट नहीं है। मार्च के शुरुआती दिनों में पारा बढ़ा हुआ है।

6 मार्च से नया सिस्टम, बारिश के आसार मौसम विभाग के अनुसार, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो रहा है। 6 मार्च को यह एक्टिव हो जाएगा। अगले 2 से 3 दिन में इसका असर प्रदेश में देखने को मिल सकता है।

मार्च में तीनों मौसम का असर मध्यप्रदेश में पिछले 10 साल के आंकड़ों पर नजर डालें तो मार्च महीने में रातें ठंडी और दिन गर्म रहते हैं। बारिश का ट्रेंड भी है। इस बार भी ऐसा ही मौसम है। भोपाल, इंदौर और उज्जैन में दिन का अधिकतम तापमान 40 डिग्री के पार पहुंच सकता है जबकि रात में 10 से 17 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार, मार्च में ग्वालियर में मौसम सबसे ज्यादा बदला हुआ रहता है। यहां रात में पारा 8 डिग्री तक पहुंच चुका है। जबलपुर में दिन में गर्मी और रात में ठंड रहती है।

अप्रैल-मई सबसे ज्यादा गर्म रहेंगे मौसम विभाग ने इस साल अप्रैल और मई में सबसे ज्यादा गर्मी पड़ने का अनुमान जताया है। इन दो महीने के अंदर ग्वालियर, चंबल, जबलपुर, रीवा, शहडोल और सागर संभाग के जिलों में पारा 45 डिग्री के पार पहुंच सकता है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन और नर्मदापुरम संभाग भी गर्म रहेंगे।

फरवरी में 4 बार ओले-बारिश हुई इस बार फरवरी में मौसम का मिजाज चार बार बदला। शुरुआत में ही प्रदेश में दो बार ओले, बारिश और आंधी का दौर रह चुका है। इससे फसलों को खासा नुकसान हुआ था। इसके बाद सरकार ने प्रभावित फसलों का सर्वे भी कराया था। 18 फरवरी से तीसरी बार प्रदेश भीग गया है। 19, 20 और 21 फरवरी को भी असर रहा। फिर चौथी बार 23-24 फरवरी को भी ओले-बारिश का दौर रहा।

भोपाल में मार्च महीने में दिन में तेज गर्मी पड़ने के साथ बारिश का ट्रेंड भी है। मौसम विभाग के अनुसार, मार्च महीने में गर्मी के सीजन की शुरुआत हो जाती है। इसके चलते दिन-रात के तापमान में बढ़ोतरी होने लगती है। आंकड़ों पर नजर डालें तो 30 मार्च 2021 को अधिकतम तापमान रिकॉर्ड 41 डिग्री पहुंच चुका है। वहीं, 45 साल पहले 9 मार्च 1979 की रात में पारा 6.1 डिग्री दर्ज किया गया था। वर्ष 2014 से 2023 के बीच दो बार ही अधिकतम तापमान 36 डिग्री के आसपास रहा। बाकी सालों में पारा 38 से 41 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा है।

इंदौर में मार्च से गर्मी का असर तेज होने लगता है। यहां दिन का पारा 41.1 डिग्री तक पहुंच चुका है, जो 28 मार्च 1892 को दर्ज किया गया था। 4 मार्च 1898 को रात में पारा 5 डिग्री सेल्सियस तक रहा था।

24 घंटे में करीब एक इंच बारिश होने का रिकॉर्ड है, जबकि पूरे महीने में दो इंच पानी गिर चुका है। मौसम विभाग के अनुसार, मार्च में 2 से 3 दिन बारिश होती है। कभी-कभी धूल भरी हवा की रफ्तार भी तेज होती है।

मार्च महीने में ग्वालियर में गर्मी, ठंड और बारिश तीनों का ही ट्रेंड है। 31 मार्च 2022 को दिन का पारा रिकॉर्ड 41.8 डिग्री पहुंच गया था, जबकि 1 मार्च 1972 की रात में न्यूनतम तापमान 5.4 डिग्री रिकॉर्ड हो चुका है। साल 2015 में पूरे महीने 5 इंच से ज्यादा पानी गिरा। वहीं, 12 मार्च 1915 को 24 घंटे में करीब 2 इंच बारिश हुई थी।

जबलपुर में मार्च में भी रातें ठंडी रहती हैं। पारा औसत 15 डिग्री के आसपास ही रहता है। वहीं, दिन में 36 से 40 डिग्री के बीच तापमान दर्ज किया जाता है। 31 मार्च 2017 को दिन का पारा 41.2 डिग्री सेल्सियस पहुंच चुका है, जबकि 4 मार्च 1898 में रात का तापमान 3.3 डिग्री दर्ज किया गया था। यहां मार्च में मावठा भी गिरता है। पिछले 10 में से 9 साल बारिश हो चुकी है। उज्जैन में दिन रहते हैं गर्म, 6 दिन बारिश का ट्रेंड भी उज्जैन में दिन गर्म रहते हैं। 22 मार्च 2010 को पारा रिकॉर्ड 42.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच चुका है। वहीं, 1 मार्च 1971 की रात में न्यूनतम तापमान 4.6 डिग्री रहा था। पिछले साल दिन में तापमान 36 से 42 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा है। उज्जैन में 2017 सबसे गर्म साल रहा था। मौसम विभाग के अनुसार, इस महीने बारिश भी होती है। एक दिन में पौने 2 इंच बारिश का रिकॉर्ड 17 मार्च 2013 का है।

6 साल में कंपनियों ने जिन रोड पर 600% अधिक तक टोल वसूला, उन्हीं पर दुर्घटनाओं में ज्यादा मौतें

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मप्र की सड़कों पर सफर महंगा और असुरक्षित होता जा रहा है। विधानसभा में पूछे गए सवालों के जवाब में सामने आया है कि कई प्रमुख फोरलेन सड़कें अपनी निर्माण लागत से कई गुना ज्यादा टोल वसूल चुकी हैं। कुछ प्रोजेक्ट्स में 600 फीसदी तक वसूली हो चुकी है। इसके बावजूद 12 साल तक टोल से राहत की संभावना नहीं है।

आंकड़ों के अनुसार जावरा-नयागांव फोरलेन पर 618.84%, लेबड़-जावरा फोरलेन पर 403.59% और भोपाल-देवास मार्ग पर 481.5% राशि वसूली जा चुकी है। ग्वालियर-भिण्ड मार्ग पर 186% और रीवा-हनुमना मार्ग पर 114% वसूली दर्ज की गई है। यानी इन सड़कों से लागत से कहीं अधिक रकम कंपनियां वसूल चुकी हैं। भोपाल बायपास का मामला भी सवालों में है। 12 दिसंबर 2019 से दिसंबर 2025 तक यहां 284.33 करोड़ रुपए टोल वसूला गया। इसी अवधि में रखरखाव और प्रबंधन पर 94.52 करोड़ रुपए खर्च किए गए। इससे पहले कंपनी ने करीब 241.97 करोड़ रुपए की वसूली की थी। विधायक प्रताप ग्रेवाल ने सवाल उठाया कि कंपनी को हर साल 21 करोड़ रुपए प्रीमियम देना था। छह साल तक यह प्रीमियम क्यों नहीं वसूला गया। जब वसूली सरकार कर रही है तो टोल गेट पर निजी कंपनी के बोर्ड अब भी क्यों लगे हैं। उधर, इन्हीं सड़कों पर लगातार हादसे हो रहे हैं। हजारों वाहन चालक जान गंवा चुके हैं।

पांच टोल रोड और इनमें हादसों में हुई मौतें

1. लेबड़–जावरा फोरलेन : निर्माण लागत 589.31 करोड़ रुपए थी। जनवरी 2026 तक कंपनी यहां से 2378.43 करोड़ वसूल चुकी है। लागत का लगभग 403% अधिक। इसी सड़क पर 6 साल में 4,123 दुर्घटनाओं में 2225 मौतें हुईं।
2. जावरा-नयागांव फोरलेन : लागत 425.71 करोड़ रुपए थी। अब तक कंपनी 2634.46 करोड़ रुपए यानी लागत का 618% से भी अधिक वसूल चुकी है। इस मार्ग पर बीते 6 साल में 3,696 दुर्घटनाएं और 1,281 मौतें हुईं।
3. भोपाल-देवास मार्ग : इस सड़क बनाने वाली कंपनी ने 426.64 करोड़ रुपए खर्च किए थे। बीते 6 साल इस टोल से 2054.42 करोड़ रुपए की वसूली हो चुकी है। यानी निवेश का करीब 481%। इसी टोल रोड पर 2,872 दुर्घटनाएं हुई हैं और इनमें से 315 लोगों की मौत हो चुकी है।
4. ग्वालियर-भिण्ड मार्गः लागत 302.53 करोड़ रुपए थी। 564.36 करोड़ वसूले जा चुके हैं, जो लागत का 186% है। इसी अवधि में यहां 4,727 दुर्घटनाएं हुई हैं और इनमें से 1,503 लोगों की मृत्यु हो चुकी है।
5. खलघाट-मनावर मार्गः जनवरी 2026 तक कुल 20.19 करोड़ टोल वसूला जा चुका है। निर्माण लागत 19.49 करोड़ रुपए थी। यहां 6 साल में 925 दुर्घटनाएं हुई और 277 मौतें दर्ज की गई।

बेस्ट ऑफ फाइव खत्म, मप्र बोर्ड में अगले साल से 10वीं में 7 तो 12वीं में देने होंगे 6 पेपर

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिमं) की बोर्ड परीक्षाओं में बैठने वाले लाखों छात्रों के लिए एक बड़ा नीतिगत बदलाव होने जा रहा है। पिछले 9 सालों से जिस 'बेस्ट ऑफ फाइव' सिस्टम के सहारे छात्र बोर्ड परीक्षा में अधिक नंबर ला रहे थे, अब उसे समाप्त करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। नए पैटर्न के तहत कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को 6 की जगह 7 और 12वीं के विद्यार्थियों को 5 की जगह 6 विषयों की परीक्षा देनी होगी। बदलाव की मुख्य वजह यह है कि छात्र परीक्षा तो पास कर रहे हैं, पर अनिवार्य विषयों की गहराई से जानकारी न होने के कारण सरकारी नौकरियों की दौड़ में पिछड़ रहे हैं। बोर्ड ने यह प्रस्ताव लोक शिक्षण संचालनालय को भेजा है, जहां से हरी झंडी मिलने के बाद इसे शासन को भेजा जाएगा।

मप्र माध्यमिक शिक्षा मंडल के सचिव बुद्धेश कुमार वैद्य के अनुसार, विषयों की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव शासन को भेजा गया है। हमारा उद्देश्य केवल पास प्रतिशत बढ़ाना नहीं, बल्कि छात्रों की शैक्षणिक गुणवत्ता को सुधारना है ताकि वे भविष्य की चुनौतियों और नौकरियों के लिए तैयार हो सकें। इसे 2026-27 के सत्र से लागू करने की योजना है।

विद्यार्थियों का गणित व विज्ञान जैसे विषयों पर कम ध्यान था, पास होने के बावजूद नौकरी में पिछड़ रहे थे।

10वीं का नया समीकरणः अब 6 के बजाय 7 पेपर देने होंगे। इसमें हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान के साथ एनएसक्यूएफ (व्यावसायिक कोर्स) अनिवार्य रूप से जुड़ जाएगा। रिजल्ट 'बेस्ट ऑफ सिक्स' (7 में से 6 श्रेष्ठ अंक) के आधार पर बनेगा।

12वीं का बदलावः अब 5 के बजाय 6 पेपर लिखने होंगे। रिजल्ट "बेस्ट ऑफ फाइव' (6 में से 5 श्रेष्ठ अंक) के आधार पर बनेगा।

2017 में जब 10वीं का रिजल्ट गिरकर 49.86% रह गया था, तब छात्रों को 'राहत' देने के लिए यह सिस्टम लाया गया था। इससे पास प्रतिशत तो बढ़ गया (2018 में 66.54%), लेकिन छात्रों ने गणित, अंग्रेजी और विज्ञान जैसे कठिन विषयों को पढ़ना छोड़ दिया।

आस्था बनी पर्यटन की सबसे बड़ी ताकतःटॉप-10 में 7 धार्मिक स्थल, महाकाल दर्शन के लिए सबसे ज्यादा पहुंच रहे श्रद्धालु

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

प्रदेश में पर्यटन का चेहरा तेजी से बदल रहा है। प्राकृतिक और हेरिटेज स्थलों के मुकाबले अब मंदिर और तीर्थ केंद्र पर्यटकों की पहली पसंद बनकर उभरे हैं। पर्यटन विभाग के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2024 में प्रदेश के पर्यटन स्थलों पर पहुंचे करीब 13.41 करोड़ पर्यटकों में सबसे ज्यादा भीड़ उज्जैन के महाकाल मंदिर में दर्ज की गई, जहां अकेले 7.32 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पहुंचे। आस्था का असर इतना बड़ा है कि टॉप-10 पर्यटन स्थलों में से 7 स्थान धार्मिक केंद्र हैं। मैहर स्थित मां शारदा धाम में 1.33 करोड़, चित्रकूट में करीब 1.19 करोड़, जबकि ओंकारेश्वर और सलकनपुर जैसे तीर्थ स्थलों पर भी लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचे।

साल 2025 में भी यही ट्रेंड जारी रहा। नवंबर तक प्रदेश में 13.45 करोड़ से ज्यादा पर्यटक पहुंचे, जिनमें अकेले महाकाल दर्शन के लिए 5.52 करोड़ श्रद्धालु उज्जैन पहुंचे। चित्रकूट और मैहर में भी डेढ़ करोड़ के आसपास श्रद्धालुओं की आमद दर्ज हुई।

सलकनपुर आगे बढ़ा तो ओंकारेश्वर की रैंक फिसलीः वर्ष 2024 के मुकाबले 2025 में नवंबर तक ही प्रदेश के कई प्रमुख धार्मिक स्थलों की रैंकिंग बदल गई है। सबसे बड़ा बदलाव चित्रकूट में दिखा, जहां 2024 में करीब 1.19 करोड़ श्रद्धालुओं के साथ तीसरे स्थान पर रहा यह तीर्थ 2025 में 1.60 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के साथ सीधे दूसरे नंबर पर पहुंच गया। इसी तरह मैहर स्थित मां शारदा धाम, जहां 2024 में 1.33 करोड़ श्रद्धालु पहुंचे थे, वह 2025 में करीब 1.57 करोड़ दर्शनार्थियों के बावजूद तीसरे स्थान पर खिसक गया, क्योंकि चित्रकूट में ज्यादा तेजी से बढ़ोतरी दर्ज हुई।

मैनिट भोपाल में राष्ट्रीय विज्ञान समोह में एक्सपर्ट ने कहा- वैज्ञानिक सोच केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित ना रहे, समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचनी चाहिए

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

वैज्ञानिक सोच केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित ना रहकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचनी चाहिए। यह बात कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आरके पटेरिया ने मैनिट में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान समारोह के दौरान कही।

28 फरवरी को मनाए जाने वाले राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में सोमवार को आयोजित इस कार्यक्रम में "साइंस फॉर सोसाइटीः साइबर फॉरेंसिक साइंस एंड डिजिटल डेमोक्रेसी" विषय पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में "वुमेन इन साइंसः कैटालाइसिंग विकसित भारत" को विशेष फोकस दिया गया। एलआरसी ए-ब्लॉक स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित इस आयोजन का उद्देश्य विज्ञान को समाज की डिजिटल चुनौतियों से जोड़ना और विद्यार्थियों में अनुसंधान व नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना रहा।

आयोजन का संयोजन डॉ. ज्योति भारती और डॉ. विजय भास्कर सेमवाल ने किया।

आयोजन का संयोजन डॉ. ज्योति भारती और डॉ. विजय भास्कर सेमवाल ने किया। कार्यक्रम में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च भोपाल (NITTTR) के प्रोफेसर डॉ. नीरज कुमार राठौर ने मुख्य निर्णायक की भूमिका निभाते हुए छात्र प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन किया और विज्ञान प्रबंधन से जुड़े महत्वपूर्ण सुझाव दिए। डॉ. सविता दीक्षित ने महिला वैज्ञानिकों की ऐतिहासिक यात्रा पर प्रकाश डाला, जबकि डॉ. अजय चौबे ने बौद्धिक संपदा अधिकारों की उपयोगिता समझाई। डॉ. अक्षय अग्रवाल ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लोकतंत्रीकरण पर व्याख्यान दिया और डॉ. दीप सिंह तोमर ने "Unslide Video" की अवधारणा के माध्यम से एआई की संभावनाओं को रेखांकित किया। समारोह के दौरान आयोजित क्विज प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने साइबर फॉरेंसिक और सामान्य विज्ञान पर अपनी जानकारी का प्रदर्शन किया। लाइटनिंग टॉक्स के इम्प्रोम्प्टू सत्र में प्रतिभागियों ने गुप्त विषयों पर त्वरित तैयारी कर प्रभावशाली प्रस्तुति दी। मीम मेकिंग प्रतियोगिता विशेष आकर्षण का केंद्र रही, जहां छात्रों ने जटिल तकनीकी विषयों को रचनात्मक और सरल रूप में प्रस्तुत किया। इस आयोजन का संयोजन डॉ. ज्योति भारती और डॉ. विजय भास्कर सेमवाल ने किया। कार्यक्रम के संचालन और व्यवस्थाओं में छात्र समन्वयकों में आयुष सूर्यवंशी, निशांत तिवारी, हिमांशु, अजय शुक्ला, भौमिक, रवि आशुतोष, निहारिका, नम्रता, रेखा और भावना की सक्रिय भूमिका रही।

मिसरोद विवादः जेहादी कहने और डी एन ए टेस्ट कराए जाने को लेकर पाटीदार समाज, ओबीसी मोर्चा में आक्रोश

- एक तरफा कार्रवाई करने से नाराज होकर पुलिस के खिलाफ खोला मोर्चा, पुलिस कमिश्नर, कलेक्टर के नाम सौंपा ज्ञापन
- पाटीदार समाज मांगलिक भवन रामलीला मैदान में 2000 से ज्यादा लोग हुए एकत्रित, 1000 से ज्यादा महिलाएं शामिल
- एकपक्षीय कार्रवाई का आरोपः "साध्वी की गाड़ी रॉन्ग साइड थी, फिर भी हमारे लोगों पर हुई FIR"

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी के मिसरोद क्षेत्र में बीते दिनों साध्वी रंजना और स्थानीय निवासियों के बीच हुए विवाद ने अब तूल पकड़ लिया है। मंगलवार को पाटीदार समाज संगठन और OBC संयुक्त मोर्चा के बैनर तले करीब 2000 लोगों ने शांति पूर्वक विरोध प्रदर्शन किया। आरोप है कि मिसरोद पुलिस ने राजनीतिक दबाव में आकर एकपक्षीय कार्रवाई की है और निर्दोष लोगों पर गैर-जमानती धाराएं थोप दी हैं। पाटीदार समाज ओबीसी मोर्चा ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाते हुए अपनी मांगों को लेकर पुलिस कमिश्नर और कलेक्टर के नाम एसीपी मिसरोद रजनीश कश्यप कौल को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान टीआई मिसरोद रतन सिंह परिहार और टीआई बागसेवनिया अमित सोनी भी मौजूद रहे।

रॉन्ग साइड ड्राइविंग और संकरा रास्ता होने से उपजा विवाद : ज्ञापन में समाज ने स्पष्ट किया कि 25 फरवरी की शाम शासकीय स्कूल के पास सड़क संकरी होने के कारण जाम लगा था। आरोप है कि साध्वी रंजना का वाहन 'रॉन्ग साइड' में था, जिससे विवाद की स्थिति निर्मित हुई। जब स्थानीय युवक ने वाहन पीछे लेने का आग्रह किया, तो साध्वी ने अभद्र व्यवहार करते हुए युवक को चांटा मार दिया और कपड़े फाड़ दिए। इसी हंगामे के बीच आक्रोशित भीड़ ने वाहन में तोड़फोड़ की, जो कि एक स्वतः स्फूर्त प्रतिक्रिया थी।

"6 घंटे थाने में स्वस्थ बैठी रहीं साध्वी, फिर कैसे हुईं भर्ती?"

समाज का कहना है कि घटना के बाद साध्वी रात 12 बजे तक थाने में पूर्णतः स्वस्थ बैठी थीं (जिसके सीसीटीवी फुटेज मौजूद हैं), लेकिन अगले दिन अचानक अस्पताल में भर्ती होकर फर्जी मेडिकल पर्चा बनवा लिया गया। ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस ने समझौते का आश्वासन देकर उनकी FIR दर्ज नहीं की और रात के अंधेरे में दबाव में आकर समाज के 4 नामजद और अन्य लोगों पर केस दर्ज कर लिया। घटना के दौरान वाहन चालक द्वारा तेजी से गाड़ी भगाने के कारण एक युवक बोनट पर गिर गया था, जिसने जान बचाने के लिए गाड़ी की छत पकड़ी थी, जिसे पुलिस गलत तरीके से पेश कर रही है।

उच्च स्तरीय जांच की मांग : OBC संयुक्त मोर्चा और पाटीदार समाज ने पुलिस आयुक्त से मांग की है कि किसी वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी से इस पूरे घटनाक्रम की निष्पक्ष जांच कराई जाए। जांच पूरी होने तक किसी भी नए व्यक्ति का नाम केस में न जोड़ा जाए और दर्ज किए गए 'झूठे' मामले वापस लिए जाएं। समाज ने चेतावनी दी है कि यदि न्याय नहीं मिला, तो वे उग्र आंदोलन के लिए बाध्य होंगे।

'हम मामले की जांच कर रहे हैं, साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई होगी। पुलिस किसी को परेशान नहीं करेगी।'
-रजनीश कश्यप कौल, एसीपी मिसरोद।

'हम साधु संतों का सम्मान करते हैं लेकिन धर्म की आड़ में हमारे समाज को जिहादी और अराजक तत्व कहना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पुलिस निर्दोषों के घर दबिश देना बंद करें।'
-प्रतिनिधि पाटीदार समाज संगठन, ओबीसी युवा मोर्चा भोपाल

कस्तूरबा नगर जिनालय में श्री सिद्ध चक्र विधान समापन पर सामूहिक जाप अनुष्ठान

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जैन मंदिर कस्तूरबा नगर मंदिर में आठ दिवसीय विधान का समापन भक्ति भाव से हुआ यहां भगवान जिनेंद्र का अभिषेक पूजा अर्चना के साथ हवन भी हुआ मंदिर समिति के अध्यक्ष सुनील जैनाविन ने बताया श्रद्धालुओं द्वारा प्रतिदिन नवकार महामंत्र का जाप किया जा रहा था प्रतिदिन नियम संयम के साथ समाज के लोग भगवान सिद्धि की आराधना में लीन थे श्रद्धा भक्ति के साथ अनुष्ठान का समापन हुआ और सभी ने अपने जीवन को संयम मय बनाने के लिए नियमभी लिए।

शहर के मंदिरों में आठ दिवसीय श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान का समापन

नंदीश्वर जिनालय में विश्व शांति महायज्ञ में आहुति के साथ जगत में विनाश बंद हो, सभी विकास की ओर अग्रसर हो प्रार्थना की गई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी के जैन मंदिरों में अष्टानी का पर्व के अवसर पर आर्ट दिवसीय सृष्टि चक्र महामंडल विधान का समापन हुआ मंदिरों में अभिषेक पूजा अर्चना के साथ विश्व शांति है महायज्ञ में आहुतियां दी गई,, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया नंदीश्वर जिनालय में विराजमान भगवान जिनेंद्र की प्रतिमाओं का अभिषेक शांति धारा के साथ 1024 खार्पित किए गए , इन दिनों में श्रद्धालुओं ने संयम नियम के साथ भौतिक सुख सुविधाओं को दूर कर विशेष आराधना की,,, ओर व्रत उपवास किए,जिनालय में प्रमुख मंडल पर श्रीफल समर्पित कर सभी के मंगल में जीवन की कामना और जगत में शांति की कामना की गई,,,, इस विशेष अवसर पर विश्व शांति महायज्ञ में आहुति के साथ सारे संसार में विनाश बंद हो और सभी विकास की ओर अग्रसर हो विशेष प्रार्थना की गई ,, ,, मंदिर समिति द्वारा पुण्याजर्क परिवारों का बहुमान किया गया संचालन डॉ सर्वज्ञ जैन

ने किया इस अवसर पर अध्यक्ष एडवोकेट विजय चौधरी प्रमोद ऊषा चौधरी , सो धर्म इंद्र कमल क्रांति द्रव्य सहयोग अरविंद अर्चना प्रियेश अर्पिता आर टी ओ कुबेर पदम संगीता श्रीपाल मेना सुंदरी राकेश सुनीता सलामतपुर महायज्ञ नायक शैलेश रेखा डॉ सर्वज्ञ जीतू सिलवानी नील चौधरी अन्य प्रमुख इंद्र विपिन विनीता सिंघई विनोद पुष्पा जैन डॉ शैलेंद्र डॉ स्वाति मनोज बबलू नीलिमा सृजन अजीत वंदना बर्फी हाउस प्रशांत अमिता अशोक सुनीता आर एस आनंद नीलम वर्धन चक्रेश ममता चौधरी ऋषभ कमलेश सिंघई निर्मल सरोज हुंडी नरेंद्र शोभा बजाज मौजूद थे, प्रवक्ता अंशुल के अनुसार शहर के प्रमुख प्रोफेसर कॉलोनी चौक जैन मंदिर कस्तूरबा नगर मंदिर मंगलवारा पिपलानी अयोध्या नगर अशोका गार्डन अहिंसा विहार नेमीनगर करोद बैरागढ़ सिद्धार्थ लेक सिटी चंदन नगर कोई फिजा शाहजहानाबाद नवग्रह जनली सहित सभी प्रमुख मंदिरों में विशेष आराधना पूजा अर्चना की गई।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी धाम मंदिर की गर्भगृह में की गई दिव्य नक्काशी एवं अलंकरण अपने आप में अद्वितीय है।

इस पवित्र कार्य को पूर्ण करने में लगभग तीन माह का समय लगा, जिसमें अत्यंत सूक्ष्मता, धैर्य और साधना भाव के साथ शिल्प का सृजन किया गया। नक्काशी के दौरान कहीं-कहीं शिल्पकार से आकृतियों में त्रुटि हो जाती थी, किंतु दादाजी ने स्वयं उपस्थित रहकर उन्हें शास्त्रसम्मत विधि से सुधार का मार्गदर्शन दिया। मंदिर की एक-एक रेखा, एक-एक रूप और एक-एक प्रतीक दादाजी के प्रत्यक्ष निर्देशों एवं दिव्य दृष्टि के अनुरूप निर्मित हुआ। दादाजी के आदेशानुसार मंदिर के समस्त देवस्थानों में नक्काशीदार डिज़ाइन निर्मित की गई है। प्रत्येक पवित्र स्थान पर शेरमुख का निर्माण किया गया है, जो शक्ति, साहस, संरक्षण और धर्म की अडिगता का प्रतीक है। यह प्रतीकात्मक शिल्प न केवल सौंदर्य को बढ़ाता है, बल्कि श्रद्धालुओं के मन में विश्वास और निर्भयता का संचार भी करता है। मंदिर का मुख्य शिखर, जिसकी ऊँचाई लगभग 85 फीट है, निर्माण के दौरान तिरछा प्रतीत होने लगा था। परंतु बड़े दादाजी की असीम कृपा और दिव्य अनुकंपा से वह शिखर स्वतः ही सीधा एवं संतुलित हो गया। यह घटना दादाजी की कृपा, उनकी साधना-शक्ति और ईश्वरीय संरक्षण का प्रत्यक्ष प्रमाण मानी जाती है।

मंदिर के समस्त सागौन लकड़ी के द्वारों पर भगवान की दिव्य आकृतियाँ उकेरी गई हैं। इन द्वारों से प्रवेश करते ही भक्त के हृदय में श्रद्धा, पवित्रता और आत्मिक शांति का संचार होता है। प्रत्येक आकृति शिल्प, भक्ति और विश्वास का संगम है, जो साधक को सांसारिकता से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक अनुभूति की ओर ले जाती है।

इस प्रकार दादाजी धाम मंदिर का प्रत्येक अंग गर्भगृह, नक्काशी, शिखर और द्वार केवल निर्माण नहीं, बल्कि धर्म, श्रद्धा, विश्वास और लोक कल्याण की जीवंत साधना है। यह मंदिर दादाजी के अवतरण के उद्देश्य को साकार करता हुआ, मानव मात्र को धर्मपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।

अज्ञान से आत्मबोध तक!

मनुष्य का जीवन केवल सांस लेने और भौतिक सुविधाओं के उपभोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चेतना, अनुभव और आत्मबोध की निरंतर यात्रा है। जब तक मनुष्य अज्ञान के अंधकार में भटकता रहता है, तब तक वह बाहरी स्वतंत्रता के बावजूद भीतर से बंधा रहता है। अज्ञान से बाहर निकलना, अनुभव और संघर्ष से सीखना, संवेदनशीलता विकसित करना और आत्मकेंद्रित दृष्टि से ऊपर उठकर मानव-कल्याण के उद्देश्य से जुड़ना, यही जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि और वास्तविक स्वतंत्रता का मार्ग है।

अज्ञान मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा बंधन है। यह केवल ज्ञान के अभाव का नाम नहीं, बल्कि सत्य से दूरी, पूर्वाग्रहों की जकड़न और आत्मबोध के अभाव की स्थिति है। जब मनुष्य केवल परंपराओं, रूढ़ियों और सुनी-सुनाई बातों के आधार पर सोचता है, तब वह अपने विवेक और चेतना का उपयोग नहीं कर पाता। अज्ञान उसे भय, संकीर्णता और भ्रम में बांध देता है। वह सत्य को देखने के बजाय सुविधा के अनुसार सोचता है और अपने हित को ही सर्वोच्च मान लेता है। ऐसी स्थिति में वह न तो स्वयं को समझ पाता है और न समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को।

इसलिए सच्ची मुक्ति का पहला चरण अज्ञान के अंधकार से बाहर निकलना है, जहां मनुष्य प्रश्न करना सीखता है और अपने भीतर छिपी चेतना को पहचानता है। अनुभव मनुष्य को जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराता है। पुस्तकें और उपदेश दिशा तो दे सकते हैं, पर जीवन की गहराई का बोध अनुभव से ही होता है। सुख और दुख, सफलता और असफलता, प्रेम और पीड़ा, ये सभी अनुभव मनुष्य के दृष्टिकोण को परिष्कृत करते हैं।

जब मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है, तब वह केवल परिस्थितियों का शिकार नहीं रहता, बल्कि उन्हें समझने और उनसे आगे बढ़ने की क्षमता विकसित करता है। अनुभव उसे यह सिखाता है कि जीवन निरंतर परिवर्तनशील है। इसमें छिपी सीख ही उसे परिपक्व बनाती है। संघर्ष इस सीख को और अधिक गहराई देता है। जब मनुष्य कठिन परिस्थितियों से गुजरता है, तब उसकी वास्तविक शक्ति प्रकट होती है। संघर्ष उसे सहनशीलता, धैर्य और आत्मविश्वास प्रदान करता है। जो व्यक्ति संघर्ष से भागता है, वह जीवन की परीक्षा में कमजोर पड़ जाता है, जबकि संघर्ष मनुष्य को यह एहसास कराता है कि जीवन की सार्थकता केवल आराम में नहीं, बल्कि चुनौतियों का सामना करने में है। यही संघर्ष धीरे-धीरे उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर, भय से साहस की ओर और निराशा से आशा की ओर ले जाता है। संवेदनशीलता मनुष्य को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी सोचने की क्षमता देती है। जब मनुष्य दूसरों के दुख, पीड़ा और संघर्ष को महसूस करता है, तब उसके भीतर करुणा और सहानुभूति जन्म लेती है।

संवेदनशील व्यक्ति केवल अपनी सफलता से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि समाज की समस्याओं को भी समझता है। वह जानता है कि उसकी मुक्ति केवल व्यक्तिगत नहीं हो सकती, क्योंकि वह समाज का ही हिस्सा है। संवेदनशीलता मनुष्य को आत्मकेंद्रित दृष्टि से बाहर निकालकर व्यापक मानवता से जोड़ती है। आत्मकेंद्रित दृष्टि मनुष्य के विकास में सबसे बड़ा अवरोध है। जब मनुष्य केवल अपने लाभ, प्रतिष्ठा और सुविधाओं के बारे में सोचता है, तब उसका दृष्टिकोण संकीर्ण हो जाता है। वह समाज को केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति का साधन समझने लगता है। ऐसी स्थिति में वह चाहे कितना ही सफल क्यों न हो जाए, भीतर से खाली रहता है। वास्तविक संतोष और शांति उसे तब मिलती है, जब वह अपने जीवन को किसी बड़े उद्देश्य से जोड़ता है। आत्मकेंद्र से बाहर निकलना तभी संभव है, जब मनुष्य त्याग, समझ और व्यापक दृष्टि रखता हो। मानव-कल्याण के उद्देश्य से जुड़ना जीवन को अर्थ प्रदान करता है। जब मनुष्य अपने ज्ञान, अनुभव और शक्ति का उपयोग दूसरों के हित के लिए करता है, तब उसका जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज के विकास का माध्यम बन जाता है। मानव-कल्याण का मार्ग मनुष्य को यह सिखाता है कि उसकी पहचान केवल 'मैं' से नहीं, बल्कि 'हम' से जुड़ी है। जब वह दूसरों की भलाई में अपनी खुशी खोजता है, तब उसके भीतर आत्मिक शक्ति का विकास होता है। यही आत्मिक शक्ति उसे कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर और दृढ़ बनाए रखती है। सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ केवल बाहरी बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि आंतरिक सीमाओं से भी मुक्त होना है। जब मनुष्य अज्ञान, भय, अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठता है, तब वह वास्तव में स्वतंत्र होता है।

ऐसी स्वतंत्रता उसे आत्मबोध प्रदान करती है और उसे यह समझने में मदद करती है कि जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं, बल्कि मानवता के लिए जीना है। जो व्यक्ति हर परिस्थिति को सीख का अवसर मानता है, वह निरंतर विकसित होता रहता है। वह जीवन की कठिनाइयों से टूटता नहीं, बल्कि उन्हें अपनी चेतना के विस्तार का साधन बनाता है। वास्तव में सच्ची मुक्ति कोई एक क्षण की उपलब्धि नहीं, बल्कि एक सतत् प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया अज्ञान से ज्ञान की ओर, आत्मकेंद्र से मानव-कल्याण की ओर और सीमित दृष्टि से व्यापक चेतना की ओर ले जाती है। अनुभव, संघर्ष और संवेदनशीलता इस यात्रा के प्रमुख साधन हैं। जब मनुष्य इन तीनों को अपने जीवन में स्वीकार करता है और हर परिस्थिति को सीख के रूप में देखता है, तब वह आत्मिक शक्ति से भर उठता है। यही आत्मिक शक्ति उसे जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि, सच्ची स्वतंत्रता तक पहुंचाती है, जहां वह न केवल स्वयं मुक्त होता है, बल्कि दूसरों के जीवन को भी प्रकाश से भर देता है।

दुनिया जलाने का कौन करेंगा फैसला!

चिंताजनक बात सिर्फ बमबारी नहीं, बल्कि नियमों का कमजोर होना है। जब नागरिक संविधान पर भरोसा खोने लगें, जब अंतरराष्ट्रीय कानून वैकल्पिक लगे, जब संस्थाएं निष्पक्ष फैसले न दे सकें, तब ताकत का सिद्धांत हावी होने लगता है। लोकतंत्र का उद्देश्य यही था कि युद्ध जैसे फैसले जनता की सहमति से हों। नेता शक्ति के मालिक नहीं, उसके संरक्षक होते हैं। युद्ध अक्सर यह कहकर शुरू किए जाते हैं कि वे जरूरी हैं। लेकिन वे अक्सर पछतावे में खत्म होते हैं। ईरान के साथ बढ़ता तनाव हमें फिर उसी मोड़ पर खड़ा कर रहा है। जिन हमलों के कारण अमेरिका और इज़राइल सीधे तेहरान के खिलाफ खड़े हुए हैं, उन पर अब राजनीतिक, कानूनी और नैतिक बहस शुरू हो चुकी है। वॉशिंगटन में सांसद पूछ रहे हैं कि क्या राष्ट्रपति ने युद्ध की शक्ति का सही इस्तेमाल किया। संयुक्त राष्ट्र में विशेषज्ञ चर्चा कर रहे हैं कि क्या आत्मरक्षा का आधार सचमुच मौजूद था। अंतरराष्ट्रीय कानून याद दिलाता है कि युद्ध में भी नियम होते हैं। लेकिन कानून कोई दूर की चीज नहीं है। उसका असर आम आदमी की जिंदगी पर पड़ता है। पेट्रोल की कीमत बढ़ती है। सेना में भर्ती का नोटिस आता है। तेहरान, तेल अवीव या दुबई में कोई परिवार फोन हाथ में लिए यह संदेश पढ़ने का इंतजार करता है कि "मैं सुरक्षित हूं।" युद्ध की कीमत वही लोग चुकाते हैं जिनका फैसला लेने में सीधा हाथ नहीं होता। जो लोग सख्ती का समर्थन करते हैं, उनका कहना है कि ईरान के मिसाइल कार्यक्रम और उसके समर्थित समूहों की गतिविधियां जवाब मांगती थीं। कुछ अमेरिकी अखबार लिखते हैं कि यदि किसी देश की धमकियां खाली साबित हों, तो उसकी विश्वसनीयता घटती है और खतरा बढ़ता है। उनका तर्क है कि कमजोरी दिखाने से संघर्ष और बढ़ सकता है।

लेकिन दूसरे पक्ष का कहना है कि बिना साफ लक्ष्य के ताकत का इस्तेमाल भटकाव है। किसी नेता को हटाने से देश स्थिर नहीं हो जाता। अगर यह तय न हो कि अंत में क्या हासिल करना है, तो युद्ध ऐसा दरवाजा बन जाता है जिसमें प्रवेश तो आसान है, लेकिन बाहर निकलना मुश्किल। अमेरिका के संविधान में युद्ध घोषित करने की शक्ति कांग्रेस को इसलिए दी गई थी ताकि कोई एक व्यक्ति जल्दबाजी में देश को लंबे संघर्ष में न धकेल दे। यदि स्पष्ट अनुमति के बिना लड़ाई बढ़ती है, तो यह सिर्फ कानून को नहीं, लोकतांत्रिक व्यवस्था को भी कमजोर करती है।

कुछ विशेषज्ञ याद दिलाते हैं कि कूटनीति से पहले भी समाधान निकले हैं। ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर समझौता हुआ था, जिसमें निगरानी और प्रतिबंधों में ढील के बदले नियंत्रण तय हुआ था। अगर बातचीत का रास्ता छोड़कर सिर्फ ताकत का रास्ता अपनाया जाए, तो कट्टर ताकतों को बल मिल सकता है और हथियारों की दौड़ तेज हो सकती है।

अमेरिका में भी मतभेद हैं। कुछ लोग कहते हैं कि बड़े फैसले आम जनता की राय से दूर लिए जाते हैं। उन्हें लगता है कि सत्ता में बैठे लोग अपने नजरिये से निर्णय लेते हैं, जबकि आम नागरिकों पर उसका असर पड़ता है। इराक और अफगानिस्तान के लंबे युद्धों के बाद अमेरिका में थकान है। इज़राइल और ईरान के लोग भी लगातार तनाव में जीते-जीते थक चुके हैं। जब लोगों को लगता है कि युद्ध उनकी इच्छा से नहीं, बल्कि ऊपर से थोपा गया है, तो असंतोष बढ़ता है।

इस बीच दुनिया की अर्थव्यवस्था चुपचाप सब सुनती है। होरमुज़ जलडमरूमध्य से दुनिया के तेल का बड़ा हिस्सा गुजरता है। अगर वहां हल्का भी संकट होता है, तो तेल की कीमतें बढ़ जाती हैं। अगर कीमत 130 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर टिक जाए, तो असर सिर्फ पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगा। मुंबई में खाने-पीने की चीजें महंगी होंगी, नैरोबी में बस का किराया बढ़ेगा, बर्लिन में हीटिंग महंगी होगी। महंगाई किसी विचारधारा से नहीं, सीधी गणना से चलती है।

संयुक्त राष्ट्र, जिसे युद्ध रोकने के लिए बनाया गया था, कमजोर दिख रहा है। सुरक्षा परिषद में वीटो के कारण कई फैसले अटक जाते हैं। जांच तो होती है, पर कार्रवाई अक्सर अधूरी रह जाती है। जब कानून के साथ सख्त परिणाम न जुड़े हों, तो उसका असर कम हो जाता है।

कुछ लोग सुधार की बात करते हैं। जैसे कि आपात स्थिति में तुरंत बैठक बुलाने के नियम हों, या युद्ध से जुड़े फैसलों की स्वतंत्र समीक्षा हो, या हथियारों की बिक्री को मानवीय नियमों से जोड़ा जाए। ये उपाय युद्ध को पूरी तरह नहीं रोकेंगे, लेकिन जल्दबाजी कम कर सकते हैं।

आज एक और खतरा है—तेजी। सोशल मीडिया पर खबरें और अफवाहें तेजी से फैलती हैं। गुस्सा तथ्यों से पहले पहुंच जाता है। नेता सिर्फ दुश्मनों को नहीं, जनता की प्रतिक्रिया को भी देखते हैं। गलत जानकारी मिसाइल से तेज फैलती है। ऐसे माहौल में संयम सबसे कठिन लेकिन सबसे जरूरी कदम है।

अगर यह संघर्ष सीमित रहता है, तो इतिहास इसे नियंत्रित संकट कह सकता है। लेकिन अगर यह फैलता है—अगर अन्य देश इसमें शामिल होते हैं, अगर समुद्री रास्ते बंद होते हैं, अगर रक्षा प्रणाली टूटती है—तो असर लंबे समय तक रहेगा। तेल का झटका अर्थव्यवस्था को मंदी में धकेल सकता है। मंदी राजनीति को कट्टरता की ओर ले जा सकती है। यह सिलसिला नया नहीं है।

सबसे चिंताजनक बात सिर्फ बमबारी नहीं, बल्कि नियमों का कमजोर होना है। जब नागरिक संविधान पर भरोसा खोने लगें, जब अंतरराष्ट्रीय कानून वैकल्पिक लगे, जब संस्थाएं निष्पक्ष फैसले न दे सकें, तब ताकत का सिद्धांत हावी होने लगता है। लोकतंत्र का उद्देश्य यही था कि युद्ध जैसे फैसले जनता की सहमति से हों। नेता शक्ति के मालिक नहीं, उसके संरक्षक होते हैं।

जब फैसले लेने वाले और उनके परिणाम भुगतने वाले लोगों के बीच दूरी बढ़ती है, तो भरोसा टूटता है। सुरक्षा के नाम पर छोड़ी गई मिसाइल किसी ऐसे मोहल्ले में गिर सकती है, जहां रहने वाले उस नीति को जानते तक नहीं जिसने उसे उचित ठहराया।

युद्ध सीमाएं बदलते हैं, बजट बदलते हैं, यादें बदलते हैं। लेकिन एक सवाल पीछे रह जाता है—क्या यह सचमुच आखिरी और एकमात्र रास्ता था? यही सवाल अदालतों में, संसदों में, बाजारों में और शरणार्थी शिविरों में गूंजता रहता है। यही सवाल इतिहास के पन्नों के बीच ठहरता है, जब धुआं छंट चुका होता है लेकिन पछतावा बाकी रहता है।

–सतीश झा

बिहार में भाजपा का एजेंडा चल रहा है!

बिहार में भले नीतीश कुमार मुख्यमंत्री हैं और जनता दल यू गठबंधन का नेतृत्व करने वाली पार्टी है लेकिन सरकार में सिर्फ भाजपा का एजेंडा चल रहा है। जनता दल यू की ओर से कोई नेता ऐसा नहीं है, जो इसका विरोध कर सके। ऐसी बातें हो रही हैं, जैसी बिहार में कभी नहीं हुईं। यहां तक कि भाजपा के नेता भी पहले जो बातें कहने की हिम्मत नहीं करते थे वैसी बातें कही जा रही हैं। जाहिर है कि भाजपा के नेता अब सरकार को अपनी मानने लगे हैं और उनको पता है कि नीतीश कुमार को कोई सुध बुध नहीं है कि राज्य में क्या हो रहा है। यह नीतीश के करीबी नेताओं और मुख्यमंत्री आवास में बनाए गए सपोर्ट सिस्टम की कमजोरी है, जो कोई सवाल नहीं उठा रहा है। यहां तक कि बिहार के बंटवारे की बात हो गई और जनता दल यू की ओर से कोई सवाल नहीं उठा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बिहार के तीन दिन के दौरे पर गए तो वे सीमांचल में रहे। वहां बिहार के पूर्वी हिस्से के कुछ जिलों को अलग करके पश्चिम बंगाल के कुछ जिले मिला कर अलग राज्य बनाने की बात हुई। बहरहाल, बिहार के उप मुख्यमंत्री

सह भूमि विकास और राजस्व मंत्री विजय सिन्हा ने पिछले दिनों ऐलान किया कि बिहार में खुले में मांस, मछली आदि की बिक्री बंद होगी। ऐसा नहीं है कि उन्होंने अनायास यह बयान दे दिया। असल में भाजपा थाह ले रही है कि जनता दल यू ऐसी किसी बात का विरोध करती है या नहीं। अगर नीतीश कुमार अपने बेस्ट ऑफ माइंड में होते तो ऐसी बातें कोई नहीं करता। सोचें, बिहार देश में सबसे ज्यादा मांसाहार वाले राज्यों में शामिल है। पश्चिम बंगाल, केरल या जम्मू कश्मीर जैसे कुछ राज्य ही मांसाहार में बिहार से आगे होंगे। बिहार की लगभग 80 फीसदी आबादी मांसाहार करती है। इसके धार्मिक और सांस्कृतिक दोनों कारण हैं। लेकिन सारे देश को वैष्णव बनाने के प्रोजेक्ट में भाजपा के एक नेता ने इसको नियंत्रित करने का ऐलान किया। इससे किसी को आपत्ति नहीं हो सकती है कि मांस की बिक्री के लिए लाइसेंस दिया जाना चाहिए और स्वच्छता, गुणवत्ता का ध्यान रखना चाहिए। लेकिन उससे पहले सरकार को इसके लिए व्यवस्था बनानी होगी। इसी तरह उप मुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने यह भी ऐलान किया कि बिहार सरकार गौहत्या पर पाबंदी लगाने का कानून बनाने पर विचार कर रही है। ध्यान रहे बिहार में कभी भी यह मुद्दा नहीं रहा है। नीतीश कुमार पिछले 21 साल से सरकार चला रहे हैं। नौ महीने के जीतन राम मांझी के कार्यकाल को छोड़ दें तो नीतीश ही मुख्यमंत्री रहे और तीन साल के राजद के साथ को छोड़ दें तो वे ज्यादातर समय भाजपा के साथ ही सरकार में रहे। लेकिन कभी इस किस्म के मुद्दे नहीं उठे। सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील कोई भी मुद्दा नीतीश ने किसी को उठाने नहीं दिया। रामनवमी, दुर्गापूजा या मोहर्रम के समय छिटपुट सांप्रदायिक हिंसा हुई लेकिन नीतीश की सरकार ने कभी दंगा नहीं भड़कने दिया। भाजपा के साथ रहते हुए भी वे मुस्लिम समुदाय के लिए काम करते रहे। उन्होंने अपनी सरकार में हमेशा मुस्लिम मंत्री बनाए। लेकिन चूंकि वे अभी कोई फैसला करने की स्थिति में नहीं हैं तो भाजपा अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने में लग गई है। जदयू के नेता अपने स्वार्थ और सत्तालोलुपता में कुछ नहीं बोलते हैं। जहां तक मांसाहार की बात है तो चिराग पासवान और जीतन राम मांझी को भी इस मामले पर बोलना चाहिए था। लेकिन वो दोनों पार्टियां भी चुप्पी साधे हुए हैं।

दिल्ली कुछ काठमांडू से सीखे!

ऐसी कई बाते हैं जो काठमांडू को दिल्ली से बेहतर बनाती हैं। मिसाल के तौर पर यहाँ क़ानून व्यवस्था, दिल्ली की तुलना में काफ़ी व्यवस्थित है। यहाँ के नागरिक बताते हैं कि आधी रात को भी यहाँ महिलाएँ बेझिझक अकेली निकल सकती हैं। किसी भी तरह की छीना-झपटी नहीं होती। न ही महिलाओं के साथ किसी भी तरह की छेड़-छाड़ होती है। शहर की सड़के और फुटपाथ बिल्कुल साफ़ तो काठमांडू शहर के सार्वजनिक शौचालय भी साफ़-सुथरे। काठमांडू उस देश की राजधानी है जो आर्थिक प्रगति में भारत से कहीं पीछे है। पर हर मायने में भारत की राजधानी दिल्ली से कहीं आगे है। सारे शहर की सड़के और फुटपाथ बिल्कुल साफ़ हैं, जहाँ हर वक्त सफ़ाईकर्मी मुस्तैदी से डटे रहते हैं। ऐसा लगता है कि मोदी जी का 'स्वच्छ भारत अभियान' भारत के लिए नहीं बल्कि नेपाल के लिए था। क्योंकि भारत की राजधानी दिल्ली में तो जहाँ निगाह डालिये वहीं कूड़े के अंबार लगे पड़े हैं।

यही हाल काठमांडू शहर के सार्वजनिक शौचालयों का भी है। जो इतने साफ़ रहते हैं कि आश्चर्य होता है कि मानो किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान के शौचालय हों। दूसरी ओर दिल्ली के ज़्यादातर सार्वजनिक शौचालयों की हालत इतनी खराब है कि आसानी से घुसने की हिम्मत नहीं पड़ती। काठमांडू की एक और ख़ासियत ने पिछले तीन दिनों में मेरा ध्यान आकर्षित किया। वो है यहाँ की ट्रैफ़िक व्यवस्था। सभी व्यस्त सड़कों पर महिला और पुरुष पुलिसकर्मी सतर्क और सक्रिय रह कर ट्रैफ़िक नियंत्रित करते हैं। इतना ही नहीं यहाँ के नागरिक भी ट्रैफ़िक नियमों का ज़िम्मेदारी से पालन करते हैं। सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात तो यह थी कि काठमांडू की सड़कों पर गाड़ियों के हॉर्न का कर्कश शोर बिल्कुल भी सुनाई नहीं देता। यहाँ के ट्रैफ़िक नियमों के अनुसार आपातकालीन स्थिति को छोड़ कर, सामान्य स्थिति में हॉर्न बजाना वर्जित है और इस नियम को न मानने पर जुर्माना ठोक दिया जाता है। इससे काठमांडू में ध्वनि प्रदूषण की कोई समस्या नहीं है। इसके साथ ही वायु प्रदूषण की तो यहाँ कोई समस्या ही नहीं है। जहाँ दिल्ली में AQI की मात्रा 400 तक पहुँच जाती है वहाँ काठमांडू का AQI नगण्य है। हालांकि इसके कई कारण हैं, एक तो कठमाड़ू एक घाटी में बसा है और चारों ओर पहाड़ों से घिरा है। दूसरा यहाँ की आबादी बहुत कम है और कारख़ानों की संख्या भी उतनी ज़्यादा नहीं। इसलिए वायु प्रदूषण की दिल्ली के साथ तुलना को छोड़ा भी जा सकता है।

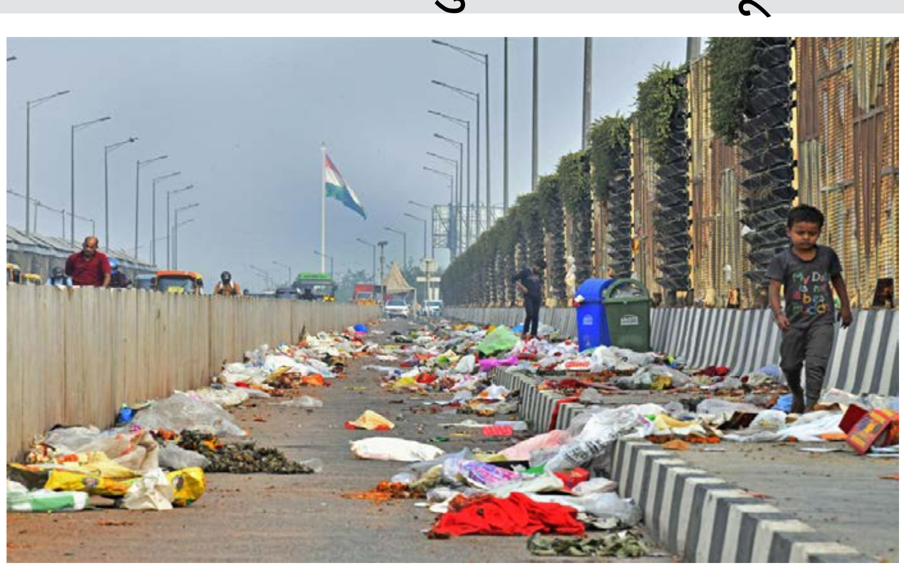

परंतु ऐसे कई अन्य कारण भी हैं जो काठमांडू को दिल्ली से बेहतर बनाते हैं। मिसाल के तौर पर यहाँ क़ानून व्यवस्था, दिल्ली की तुलना में काफ़ी व्यवस्थित है। यहाँ के नागरिक बताते हैं कि आधी रात को भी यहाँ महिलाएँ बेझिझक अकेली निकल सकती हैं। किसी भी तरह की छीना-झपटी नहीं होती। न ही महिलाओं के साथ किसी भी तरह की छेड़-छाड़ होती है। काठमांडू और नेपाल में कई विश्व प्रसिद्ध मंदिर भी हैं और पर्यटन की भी अनेकों जगह हैं। यहाँ जाने पर भी पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के साथ किसी भी तरह का छल-कपट और नाजायज़ उगाही नहीं की जाती। प्रशासन की तरफ़ से जो भी कर्मचारी तैनात किए जाते हैं वो पर्यटकों की हर संभव सहायता करते दिखाई देते हैं।

'स्वच्छ भारत अभियान' हो या कोई अन्य अभियान, किसी भी अभियान को प्रचारित करना आसान होता है, जो कि अखबारों और टीवी विज्ञापनों के ज़रिए किया जा सकता है। पर उस अभियान की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश की जनता ने उसे किस सीमा तक आत्मसात किया। अब मोदी जी के 'स्वच्छ भारत अभियान' को ही ले लीजिए। जितना इस अभियान का शोर मचा और प्रचार हुआ उसका 5 फ़ीसदी भी धरातल पर नहीं उतरा। भारत के किसी भी छोटे बड़े शहर, गांव या कस्बे में चले जाइए तो आपको गंदगी के अंबार पड़े दिखाई देंगे। इसलिए इस अभियान का निकट भविष्य में भी सफल होना संभव नहीं लगता। क्योंकि जमीनी चुनौतियां ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। स्वदेशी अभियान की सफलता भी जन-जागरण, सतत् निगरानी और व्यवहार परिवर्तन पर निर्भर करती है। अगर आम नागरिक इसमें सक्रिय भूमिका निभाएँ तभी यह आंदोलन सफल होगा।

निसंदेह 'स्वच्छ भारत अभियान' मोदी जी की एक प्रशंसनीय पहल थी। पहली बार किसी प्रधान मंत्री ने हमारे चारों ओर दिनों-दिन जमा होते जा रहे कूड़े के ढेरों की बढ़ती समस्या के निस्तारण का एक देश व्यापी अभियान छेड़ा था। उस समय बहुत से नेताओं, फिल्मी सितारों, मशहूर खिलाड़ियों व उद्योगपतियों तक ने हाथ में झाड़ू पकड़ कर फ़ोटो खिंचवा कर इस अभियान का श्रीगणेश किया था। पर सोचें आज हम कहाँ खड़े हैं?

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी सफाई व्यवस्था बनाना अब भी एक बड़ी चुनौती है। कचरा पृथक्करण, पुनः उपयोग और रीसायक्लिंग की जागरूकता में अपेक्षाकृत कमी दिखती है। कुछ जगहों पर शौचालयों के रख-रखाव, जल आपूर्ति और व्यवहार परिवर्तन को लेकर समस्याएं बनी हुई हैं। इसलिए अभियान के उद्देश्य और जमीनी सच्चाई में अंतर बना हुआ है और अनेक स्थानों पर पुराने तरीकों का पालन अब भी हो रहा है।

दिल्ली हो या देश का कोई अन्य शहर यदि कहीं भी एक औचक निरीक्षण किया जाए तो स्वच्छ भारत अभियान की सफलता का पता चल जाएगा। यदि इतने बड़े स्तर शुरू किए गए अभियान की सफलता अगर काफ़ी कम पाई जाती है तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? निसंदेह स्थानीय निकाय जिम्मेदार हैं। किंतु हम सब नागरिक भी कम जिम्मेदार नहीं है। उल्लेखनीय है कि यदि हम नागरिक किसी साफ़ सुथरे मॉल या अन्य स्थान पर जाते हैं तो सभी नियमों का पालन करते हैं। कचरे को केवल कूड़ेदान में ही डालते हैं। इस तरह हम एक साफ़ सुथरी जगह को साफ़ रखने में सहयोग अवश्य देते हैं। लेकिन ऐसा क्या कारण है कि जहाँ किसी नियम को सख़्ती से लागू किया जाता है तो हम पूरा सहयोग देते हैं। परंतु जहाँ कहीं भी किसी नियम को लागू करने में एजेंसियां ढिलाई बरतती हैं या हमारे विवेक पर छोड़ देती हैं तो आम नागरिक भी उसे हल्के में ले लेता है। भाजपा या अन्य दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं, स्थानीय निकायों और हम सब आम नागरिकों को भी भारत को कचरा मुक्त देश बनाने के लिए अब कमर कसनी होगी। क्योंकि ये कार्य केवल नारों और विज्ञापनों से नहीं हो पाएगा। आश्चर्य की बात तो यह है कि हम सब जानते हैं कि लगातार कचरे के ढेरों का, हमारे परिवेश में चारों तरफ़ बढ़ते जाना, हमारे व हमारी आनेवाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य के लिए कितना ख़तरनाक है? फिर भी हम सब निष्क्रिय बैठे हैं। हमें जागना होगा और इस समस्या से निपटने के लिए सक्रिय होना होगा। इसलिए नारे चाहे 'स्वच्छता' के लगें या 'स्वदेशी' के, जनता की भागीदारी के बिना, नारे नारे ही रहेंगे।

–विनीत नारायण

फ्रांस बढ़ाएगा एटमी हथियारों का जखीरा, यूरोप को देगा परमाणु छतरी, मैक्रों ने पेश किया न्यूक्लियर प्लान

एजेंसी पेरिस

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने परमाणु हथियारों पर बड़ा ऐलान किया है। मैक्रों ने कहा कि फ्रांस अपने परमाणु हथियारों का जखीरा बढ़ाएगा। इसके साथ ही उन्होंने यूरोप की सुरक्षा के लिए एक परमाणु प्लान पेश किया, जिसमें फ्रांस अपने साथी देशों में न्यूक्लियर हथियारों वाले एयरक्राफ्ट तैनात कर सकता है। मैक्रों ने यह घोषणा ऐसे समय में की है, जब दुनिया जियोपॉलिटकल उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है। उन्होंने इसे फॉरवर्ड न्यूक्लियर डिटरेंस कहा है।

इले लोंग्यू न्यूक्लियर सबमरीन बेस पर मैक्रों ने घोषणा की कि आठ यूरोपियन देश महाद्वीप पर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए फ्रांस के परमाणु हथियार का इस्तेमाल करने के उनके प्लान में शामिल होने पर सहमत हो गए हैं। जर्मनी, पोलैंड, स्वीडन और ब्रिटेन इसमें शामिल हैं। उन्होंने इस प्रयास में जर्मनी को एक अहम पार्टनर बताया। मैक्रों के भाषण के बाद फ्रांस और जर्मनी ने एक संयुक्त बयान जारी किया, जिसमें कहा गया कि उन्होंने एक न्यूक्लियर स्टीयरिंग ग्रुप बनाया है। इसमें कहा गया है कि यह व्यवस्था NATO के न्यूक्लियर डिटरेंस को आगे बढ़ाने न कि उसकी जगह लेगी। आजादी का मतलब अकेले हो जाना नहीं हो सकता। दुनिया में अभी इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। हम अभी जियोपॉलिटिकल उथल-पुथल के दौर से गुजर रहे हैं, जिसमें कई रिस्क हैं। मैक्रों ने अपनी योजना के बारे में बताया कि इसके तहत नीदरलैंड्स, बेल्जियम, ग्रीस और डेनमार्क जैसे देश फ्रांस की स्ट्रेटेजिक एयर फोर्स को अपने यहां रख पाएंगे। हालांकि, उन्होंने जोर देकर कहा कि न्यूक्लियर फैसले पर फ्रांस अपना कड़ा नियंत्रण बनाए रखेगा। फ्रांस और जर्मनी ने कहा कि वे इस साल से पहले ठोस कदम उठाने पर सहमत हुए हैं, जिसमें फ्रांस के परमाणु अभ्यास में जर्मनी की पारंपरिक हिस्सेदारी भी शामिल है। मैक्रों ने फ्रांस के परमाणु सिद्धांत को ऐसे समय में अपडेट किया है, जब यूरोप के प्रति अमेरिका की प्रतिबद्धता से NATO देशों में आशंका बढ़ रही है। हालांकि, अमेरिका ने कहा है कि NATO के तहत अमेरिकी डिटरेंट जारी रहेगा, लेकिन इसके बावजूद यूरोप में डर कम करने में कोई खास मदद नहीं मिली है। अमेरिका पांच यूरोपीय देशों में परमाणु बम की तैनाती करता है- इटली, जर्मनी, नीदरलैंड्स, बेल्जियम और तुर्की। मैक्रों ने कहा कि उन्होंने परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ाने का आदेश दिया है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि फ्रांस पर अपने परमाणु स्टॉक के बारे में कोई जानकारी नहीं देगा। फ्रांस के पास दुनिया का चौथा सबसे बड़ा हथियार है, जिसमें करीब 290 एटम बम हैं। ब्रिटेन के EU से निकलने के बाद अब एटमी हथियार वाला यह इकलौता यूरोपीय देश है। वहीं, यूरोप के मुख्य प्रतिद्वंद्वी रूस के पास करीब 5500 एटमी हथियार हैं, जो दुनिया में सबसे ज्यादा हैं। फ्रांस की घोषणा ऐसे समय में आई है जब रूस और यूक्रेन की जंग पांचवें साल में प्रवेश कर गई है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन कई बार अपने परमाणु हथियारों का डर दिखा चुके हैं। इसे लेकर यूरोप में आशंका बनी हुई है। पोलैंड के प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क ने कहा कि उनका देश फ्रांस और दूसरे यूरोपियन साथियों से बात कर रहा है। उन्होंने X पर लिखा, हम अपने दोस्तों के साथ मिलकर हथियार जमा कर रहे हैं, ताकि हमारे दुश्मन हम पर हमला करने की हिम्मत न कर सकें।

ईरान का $35,000 का ड्रोन बनाम 40 लाख डॉलर की मिसाइल, इजरायल-अमेरिका पर यूं भारी पड़ रहा तेहरान

एजेंसी तेल अवीव

इजरायल ईरान युद्ध अब हथियारों की कम और पैसों की लड़ाई ज्यादा बनता जा रहा है। इजरायल और अमेरिका समेत उसके साथी देशों को ईरान के हर एक हमले को रोकने के लिए लाखों डॉलर खर्च करने पड़ रहे हैं। वहीं, ईरान हमले में अपेक्षाकृत सस्ते हथियारों का इस्तेमाल कर रहा है। इसे ईरान की लंबे समय तक चलने वाली लड़ाई की तैयारी के रूप में देखा जा रहा है। वहीं ऐसी खबरें हैं कि इजरायल, अमेरिका और उसके साथी देशों के पास अब इंटरसेप्टर्स की कमी पड़ने लगी है। अमेरिका चाहकर भी इन देशों को हथियारों की सप्लाई नहीं कर पा रहा है। इस पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पूर्ववर्ती राष्ट्रपति जो बाइडन और यूक्रेन पर नाराजगी भी जताई है। रिपोर्ट्स के अनुसार, ईरान के पास अब भी हजारों की संख्या में ड्रोन और मिसाइलें हैं। वो युद्ध के बावजूद लगातार इनका प्रोडक्शन भी कर रहे हैं। इसके लिए ईरान ने पहले से ही तैयारी की हुई थी। इसका मतलब है कि ईरान हर दिन हजारों की संख्या में ड्रोन को लॉन्च कर सकता है। यह तरीका एक तरह से दुश्मन के एयर डिफेंस को अंधा करने की रणनीति का हिस्सा है। ऐसे में शुरू के कुछ दिनों में जब इजरायल, अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के इंटरसेप्टर्स खत्म हो जाएंगे, उसके बाद असली हथियारों का इस्तेमाल किया जाएगा, जो पलक झपकते लक्ष्य को बर्बाद कर देंगे। ईरान ने एक और रणनीति बनाई है, जिसमें सस्ते हथियारों का इस्तेमाल करना शामिल है। वह शाहेद टाइप के ड्रोन का इस्तेमाल कर रहा है। इसे बनाने में कथित तौर पर लगभग $35,000 का खर्च आता है। इनके हमलों को बेअसर करने के लिए इस्तेमाल होने वाली इंटरसेप्टर मिसाइलों की कीमत लाखों और कभी-कभी करोड़ों डॉलर हो सकती है। ऐसे में अगर ईरान हर दिन हजारों की संख्या में ऐसे ड्रोन लॉन्च करता है तो इसे इंटरसेप्ट करने की लागत तेजी से बढ़ सकती है, जिसे संभालना अमेरिका जैसे शक्तिशाली और धनवान देश के लिए भी भारी पड़ सकता है। इजरायल ने ईरान के हमलों के जवाब में आयरन बीम लेजर वेपन सिस्टम की तैनाती की है। इसे ईरान के खिलाफ लड़ाई में संभावित गेम-चेंजर के रूप में देखा जा रहा है। भले ही इसके हर शॉट की लागत काफी कम है, लेकिन यह काफी सीमित संख्या में ही मौजूद है। दूसरा, इसका इस्तेमाल हर तरह के इलाके में नहीं किया जा सकता है। इस भी पावर सप्लाई की जरूरत पड़ती है और वो भी बहुत ज्यादा। ऐसे में ईरान के पास ईरानी खतरों को नेस्तनाबूद करने के विकल्प सीमित होते जा रहे हैं।

पीएम मोदी ने ओमान, कुवैत और कतर के नेताओं से की बात, हमले की निंदा की; भारतीयों की सुरक्षा पर भी चर्चा

एजेंसी नई दिल्ली

ईरान जंग के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक, कुवैत के युवराज शेख सबाह अल-खालिद अल-हमद अल-मुबारक अल-सबाह और कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी से बात की। पीएम मोदी ने पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के दौरान उनके देश पर हुए हमलों को लेकर चिंता जतायी। टेलीफोन पर हुई बातचीत में, प्रधानमंत्री मोदी ने तीनों नेताओं से वहां रह रहे भारतीय समुदाय के लोगों के कल्याण और सुरक्षा पर भी चर्चा की। एक अधिकारी ने बताया, ''प्रधानमंत्री ने मंगलवार दोपहर बाद खाड़ी क्षेत्र के दो महत्वपूर्ण नेताओं से बातचीत की। उन्होंने ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक और कुवैत के युवराज शेख सबाह अल-खालिद अल-हमद अल-मुबारक अल-सबाह से फोन पर बातचीत की।'' मोदी ने दोनों नेताओं से बातचीत के दौरान, उनके देश में हुए हमलों पर चिंता जतायी और वहां रह रहे भारतीय समुदाय के लोगों के कल्याण और सुरक्षा पर चर्चा की। अमेरिका और इजराइल द्वारा ईरान के खिलाफ शुरू किए गए संयुक्त हमले के बाद फोन पर यह बातचीत हुई। प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले दो दिन में बहरीन के शाह और सऊदी अरब के युवराज से बात की तथा दोनों देशों पर हाल ही में हुए हमलों की निंदा की। मोदी ने कहा कि भारत इस कठिन घड़ी में उनके साथ एकजुटता से खड़ा है। प्रधानमंत्री ने जॉर्डन के शाह अब्दुल्ला द्वितीय से भी बात की और क्षेत्र में बिगड़ती स्थिति पर चिंता व्यक्त की। मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान और इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से भी बात की है।

ईरान युद्ध ने खोली पाकिस्तान के `डबल गेम' की पोल, सड़कों पर शियाओं ने आसिम मुनीर को फंसाया

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान के आर्मी चीफ असीम मुनीर ने बीते एक साल में लगातार देश में अपनी स्थिति मजबूत की है। वह शहबाज शरीफ की सरकार में 'वास्तविक शासक' होने का आनंद ले रहे हैं। हालांकि अब उनका यह कथित अच्छा दौर खत्म हो रहा है। अफगानिस्तान बॉर्डर पर उलझे मुनीर के सामने ईरान के संकट ने बड़ी परेशानी पैदा कर दी है। ईरान पर अमेरिकी-इजरायली हमलों के खिलाफ पाकिस्तान में हुए प्रदर्शनों ने असीम मुनीर के डबल गेम को उजागर कर दिया है। अमेरिका और इजरायल के ईरान पर हमले और सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद पाकिस्तान में सड़कों पर उतरी भीड़ हिंसक हो गई और अमेरिकी कॉन्सुलेट को निशाना बनाया। इन विरोध प्रदर्शनों के बाद पाकिस्तान को एक डिप्लोमैटिक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ रहा है।

पाकिस्तान में हुए प्रदर्शनों में कथित तौर पर 25 लोगों के मारे जाने और 100 से ज्यादा के घायल होने की बात कही गई है। इस घटना ने फील्ड मार्शल असीम मुनीर के नेतृत्व में पाकिस्तान की नीतियों के अंदरूनी विरोधाभासों को उजागर किया है। पाकिस्तान ने ईरान के खिलाफ अमेरिकी-इजरायल के ऑपरेशन से खुद को दूर दिखाना चाहा है। इसके बावजूद पाकिस्तान को इसकी घरेलू कीमत चुकानी पड़ी है। मुनीर की लीडरशिप की कोशिश अमेरिका और देश की इस्लामी भावनाओं, दोनों को खुश करने के बीच बैलेंसिंग एक्ट की रही है। इस दोहरे मैसेजिंग ने पाकिस्तानी नेतृत्व को फंसा दिया है। इसके चलते हाल की स्थिति पैदा हुई है। पाक नेतृत्व के सामने एक ऐसी स्थिति बनी, जिसमें आइडियोलॉजी को बढ़ावा देने के साथ स्टेट पॉलिसी को धुंधला कर दिया। पाकिस्तान में ईरान पर हमलों शिया आबादी ने डिप्लोमैटिक जगहों और सरकारी इमारतों पर धावा बोल दिया। कराची से गिलगित-बाल्टिस्तान और इस्लामाबाद तक अशांति फैली। इससे अधिकारियों को सेना भेजनी पड़ी और कर्फ्यू लगाना पड़ा। यह दिखाता है कि पाकिस्तान के सिक्योरिटी सिस्टम पर एक ऐसा तंत्र हावी है, जो जियोपॉलिटिकल मुद्दों को प्रैक्टिकल स्टेटक्राफ्ट के बजाय आइडियोलॉजिकल बातों के जरिए बनाती है। हालिया हिंसा ने डिप्लोमैटिक रिश्तों को नुकसान पहुंचाया है और पाकिस्तानी समाज के अंदर की भावना सामने आई है। इसने पूरे देश में सिक्योरिटी कार्रवाई को मजबूर किया। घर में अशांति का सामना करते हुए विदेश में संकटों को बढ़ाने का यह पैटर्न पाकिस्तान के नेताओं के लिए नया नहीं है। मुनीर के राज में इस्लामाबाद आइडियोलॉजी, मिलिट्री स्ट्रैटेजी और घरेलू पॉलिटिक्स को अलग करने के लिए संघर्ष कर रहा है।

ईरान-इजरायल युद्ध की आंच भारत के पड़ोस तक पहुंची, पाकिस्तान ने आनन-फानन में बंद किया अपना `आसमान'

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने मध्य पूर्व में जारी संघर्ष को देखते हुए 3 मार्च से 31 मार्च तक कमर्शियल फ्लाइट्स के लिए एयरस्पेस को थोड़ा बंद करने का ऐलान किया है। ईरान पर अमेरिका-इजरायल के हमले और बाद में तेहरान की जवाबी कार्रवाई के कारण पाकिस्तान में 300 से ज्यादा फ्लाइट्स कैंसल हो चुकी हैं। पाकिस्तान की सिविल एविएशन अथॉरिटी PAA ने यात्रियों को फ्लाइट अपडेट के लिए एयरलाइन्स के संपर्क में रहने की सलाह दी है। पाकिस्तान एयरपोर्ट्स अथॉरिटी (PAA) के अधिकारियों ने बताया है कि मध्य पूर्व में जारी लड़ाई और और उससे जुड़े एयरस्पेस बंद होने की वजह से पिछले 24 घंटों में पाकिस्तान और दुबई, दोहा, अबू धाबी, मस्कट, शारजाह और दूसरी जगहों के बीच करीब 184 इंटरनेशनल फ्लाइट्स कैंसिल कर दी गईं। PAA ने सोमवार रात कहा कि उसने कराची और लाहौर फ्लाइट रूट्स को कमर्शियल फ्लाइट्स के लिए थोड़ा बंद करने का फैसला किया है, लेकिन इस कदम का कोई कारण नहीं बताया।

अथॉरिटी ने नोटिस टू एयरमेन (NOTAM) में कहा, "कराची और लाहौर में कुछ ATS रूट सेगमेंट ऑपरेशनल कारणों से 03–31 मार्च 2026 तक, रोज़ाना 0900–1500 PKT तक उपलब्ध नहीं हैं।" एयरपोर्ट के एक अधिकारी ने अरब न्यूज़ को बताया कि अकेले सोमवार को पाकिस्तान के लिए 100 से ज़्यादा फ्लाइट्स कैंसिल कर दी गईं। सिर्फ कराची एयरपोर्ट पर दुबई, अबू धाबी, कतर, शारजाह, कुवैत और बहरीन की फ्लाइट्स समेत 32 फ्लाइट्स कैंसिल हुई हैं। वहीं, लाहौर में गल्फ की जगहों के लिए 22 फ्लाइट्स कैंसिल हुई हैं। शनिवार को इजरायल और अमेरिका के ईरान पर हमले के बाद बिगड़े हालात के कारण खाड़ी के कई देशों ने अपने हवाई क्षेत्र को बंद कर दिया है। एयरपोर्ट्स के फ्लाइट्स को उतरने और उड़ान भरने की अनुमति नहीं दी जा रही है। इस कारण बड़ी संख्या में लोग खाड़ी देशों में फंसे हुए हैं।

"अमेरिका को ऐसा सबक सिखाएंगे जो दुनिया याद रखेगी": कौन हैं अली लारीजानी, जिन्होंने ईरान में संभाला मोर्चा

एजेंसी तेहरान

ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के मौत के बाद एक नाम जो सबकी जुबान पर है, वह अली लारीजानी का है। अली लारीजानी वर्तमान में ईरान के सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सेक्रेटरी हैं। अली लारीजानी कई दशकों तक ईरान सरकार का शांत और प्रेक्टिकल चेहरा थे। उनकी पहचान एक ऐसे शख्स के तौर पर होती है, जिसने 18वीं सदी के जर्मन फिलॉसफर इमैनुएल कांट पर किताबें लिखी हैं और पश्चिम के साथ ईरान के परमाणु समझौते पर बातचीत की है। लेकिन, 1 मार्च को खामेनेई की मौत के बाद उनका लहजा पूरी तरह बदल गया है। अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायली-अमेरिकी हवाई हमले में सुप्रीम लीडर खामेनेई के मारे जाने के ठीक 24 घंटे बाद लारीजानी ने ईरान के सरकारी टेलीविजन पर आकर संदेश दिया। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, "अमेरिका और जायोनी शासन (इजरायल) ने ईरानी देश के दिल में आग लगा दी है।" उन्होंने कहा, "हम उनके दिल जला देंगे। हम जायोनी अपराधियों और बेशर्म अमेरिकियों को उनके किए पर पछतावा करवाएंगे।" उन्होंने आगे कहा, "बहादुर सैनिक और ईरान का महान देश, नारकीय अंतरराष्ट्रीय जालिमों को एक कभी न भूलने वाला सबक सिखाएगा।" अमेरिका और जायोनी शासन (इजरायल) ने ईरानी देश के दिल में आग लगा दी है। हम उनके दिल जला देंगे। हम जायोनी अपराधियों और बेशर्म अमेरिकियों को उनके किए पर पछतावा करवाएंगे। बहादुर सैनिक और ईरान का महान देश, नारकीय अंतरराष्ट्रीय जालिमों को एक कभी न भूलने वाला सबक सिखाएगा।

लारीजानी, खामेनेई की मौत के बाद ईरान को चलाने वाली तीन लोगों की ट्रांजिशनल काउंसिल में शामिल हैं। उन्हें ईरान के शासन में अहम भूमिका मिलने की उम्मीद है। अली लारीजानी का जन्म 3 जून 1958 को इराक के नजफ में हुआ था। उनका परिवार पहले से ही प्रभावशाली और अमीर था। टाइम मैगजीन ने 2009 में उन्हें 'ईरान का कैनेडीज' बताया था। उनके पिता मिर्जा हाशेम अमोली एक जाने-माने धार्मिक विद्वान थे। लारीजानी की तरह उनके भाई भी ईरान में कुछ सबसे ताकतवर पदों पर रहे हैं, जिसमें ज्यूडिशियरी और असेंबली ऑफ एक्सपर्ट्स शामिल हैं, जो एक क्लेरिकल काउंसिल है जिसे सुप्रीम लीडर को चुनने और उसकी देखरेख करने का अधिकार है। 1979 के बाद ईरान के क्रांतिकारी एलीट से लारीजानी के निजी रिश्ते भी हैं। 20 साल की उम्र में, उन्होंने फरीदेह मोताहारी से शादी की, जो इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के फाउंडर रूहोल्लाह खुमैनी के करीबी विश्वासपात्र मोर्तेजा मोताहारी की बेटी थीं। धार्मिक परिवार में जन्में और परवरिश होने के बावजूद अली लारीजानी ने उच्च स्तर की शिक्षा पाई। लारीजानी ने न सिर्फ धार्मिक शिक्षा पाई है, बल्कि उन्होंने 1979 में शरीफ यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी से मैथ और कंप्यूटर साइंस में बैचलर डिग्री हासिल की। बाद में उन्होंने तेहरान यूनिवर्सिटी से वेस्टर्न फिलॉसफी में मास्टर और डॉक्टरेट की डिग्री पूरी की और कांट पर अपनी थीसिस लिखी। उनकी बेटी फतेमेह भी तेहरान यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट है और अमेरिका के ओहियो में क्लीवलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी से अपनी स्पेशलाइज़ेशन पूरी की है।

टी20 विश्व कप सेमीफाइनल में भारत और इंग्लैंड का स्थिति एक जैसी, किसका रिकॉर्ड होगा बेहतर

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय टीम टी20 विश्व कप 2026 के सेमीफाइनल में इंग्लैंड का सामना करेगी। छठी बार भारत ने टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में खेलेगा। इससे पहले 2007, 2014, 2016, 2022 और 2024 में टीम सेमीफाइनल खेल चुकी है। इंग्लैंड की बात करें तो उसका भी छठा सेमीफाइनल है। टीम ने 2010, 2016, 2021, 2022 और 2024 में भी सेमीफाइनल में जगह पक्की की थी।

भारतीय टीम को टी20 विश्व कप में खेले 5 सेमीफाइनल में तीन जीत मिली है। टीम को 2016 में वेस्टइंडीज और 2022 में इंग्लैंड से हार मिली थी। टीम तीन बार फाइनल में पहुंची और दो बार विजेता रही। 2007 में पाकिस्तान और 2024 में साउथ अफ्रीका को हराकर खिताब जीता। 2014 में भारत को खिताबी मुकाबले में श्रीलंका से हार झेलनी पड़ी थी।

2007- ऑस्ट्रेलिया को 15 रन से हराया
2014- साउथ अफ्रीका को 6 विकेट से हराया
2016- वेस्टइंडीज से 7 विकेट से हारे
2022- इंग्लैंड से 10 विकेट से हारे
2014- इंग्लैंड को 68 रन से हराया

इंग्लैंड का रिकॉर्ड भी भारत जैसा

इंग्लैंड को भी भारत की तरह ही टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में तीन जीत और दो हार मिली है। टीम 2021 और 2024 में सेमीफाइनल में हारी थी। 2024 में उसे भारत ने ही हराया था। तीन बार खिताबी मुकाबले में जगह बनाने वाली इंग्लैंड भी दो बार की चैंपियन है। 2010 और 2022 में उसने खिताब जीता जबकि 2016 में वेस्टइंडीज ने उसे हराकर बाजी मार ली थी।

2010- श्रीलंका को 7 विकेट से हराया
2016- न्यूजीलैंड को 7 विकेट से हराया
2021- न्यूजीलैंड से 5 विकेट से हारे
2022- भारत को 10 विकेट से हराया
2024- भारत से 68 रन से हारे

टी20 विश्व कप 2026 में भी एक समान रिकॉर्ड

इस टी20 विश्व कप में भारत ने अभी तक 7 मैच खेले हैं। टीम को 6 में जीत मिली है जबकि एक में हार झेलनी पड़ी। इंग्लैंड ने भी 7 मैचों में 6 जीत हासिल की है। हालांकि टी20 विश्व कप में ओवरऑल भारत ने अभी तक 59 मैच खेले हैं। टीम को 42 जीत और 16 हार मिली है। दूसरी तरफ इंग्लैंड ने भी 59 मैच खेले हैं लेकिन टीम 34 को ही अपने नाम कर पाई। उसे 23 में हार झेलनी पड़ी।

ईरान की महिला फुटबॉलर्स ने नेशनल एंथम नहीं गाया, इस्लामी क्रांति से पहले का झंडा लेकर पहुंचे फैंस

एजेंसी नई दिल्ली

ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी में महिला फुटबॉल एशियन कप खेला जा रहा है। इस टूर्नामेंट में सोमवार को ईरान का पहला मुकाबला था। टीम की टक्कर साउथ कोरिया से हुई। मैच शुरू होने से पहले दोनों टीमों का नेशनल एंथम बजा। लेकिन इस दौरान ईरान की खिलाड़ियों ने नेशनल एंथम नहीं गाया। यह मिडिल ईस्ट में युद्ध शुरू होने के बाद उनका पहला मैच था।

क्वींसलैंड के गोल्ड कोस्ट स्टेडियम में जब ईरान का नेशनल एंथम बजा तो टीम की खिलाड़ी चुप चाप खड़ी रहीं। इस मैच में ईरान को साउथ कोरिया ने 3-0 के अंतर से हराया। ईरान की हेड कोच मरजियाह जाफरी और टीम की खिलाड़ियों से युद्ध के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने कोई भी कमेंट करने से मना कर दिया। सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत पर भी उन्होंने कुछ नहीं बोला।

टूर्नामेंट की तैयारी करने के लिए ईरान की टीम युद्ध से पहले ही ऑस्ट्रेलिया पहुंच गई थीं। टीम ग्रुप ए में साउथ कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और फिलीपींस के साथ है। 5 मार्च को उनकी भिड़ंत मेजबान ऑस्ट्रेलिया से होगी। ग्रुप राउंड के आखिरी मैच में ईरान की टीम फिलीपींस का सामना करेगी। टीम दूसरी बार ही एएफसी महिला एशियन कप में हिस्सा ले रही है। 2022 में भारत की मेजबानी में हुए टूर्नामेंट में टीम को अपने दोनों मुकाबलों में हार मिली थी।

ईरान की महिला फुटबॉल टीम पहले भी ऐसा कर चुकी है। देश में महिला पर हो रहे अत्याचार की वजह से ऐसा है। ग्राउंड पर कुछ फैन ऐसे भी थे जिन्होंने 1979 की इस्लामिक क्रांति से पहले के राष्ट्रीय झंडे पहने और लहराए। ईरान में काफी समय से महिलाओं का प्रदर्शन चल रहा है। 2022 में पुलिस हिरासत में 22 साल की एक महिला की मौत हो गई थी। इसके बाद हिजाब के खिलाफ पूरे देश में प्रदर्शन हुआ था। इस प्रदर्शन के सपोर्ट में 2022 फीफा विश्व कप में इंग्लैंड के खिलाफ मैच से पहले ईरान पुरुष टीम के खिलाड़ियों ने नेशनल एंथम नहीं गाया था।

शाहिद अफरीदी ने कहा छोटी सोच, आकाश चोपड़ा ने बताया पैसे ऐंठने का तरीका, पीसीबी के जुर्माने लगाने पर भड़के दिग्गज

एजेंसी नई दिल्ली

टी20 वर्ल्ड कप 2026 के सुपर 8 राउंड से बाहर होने के बाद पाकिस्तान क्रिकेट टीम की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। मैदान पर खराब प्रदर्शन के बाद अब खिलाड़ियों पर आर्थिक गाज गिरने की खबरें आ रही हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) प्रत्येक खिलाड़ी पर 50 लाख पाकिस्तानी रुपये का जुर्माना लगाने पर विचार कर रहा है। इस फैसले ने क्रिकेट जगत को हैरान कर दिया है और शाहिद अफरीदी , राशिद लतीफ और आकाश चोपड़ा जैसे दिग्गजों ने इसकी कड़ी आलोचना की है। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान शाहिद अफरीदी ने इस फैसले को पूरी तरह से गलत बताया है। उन्होंने एक टीवी चैनल पर बातचीत के दौरान कहा, 'यह समझ से परे फैसला है, यह छोटी सोच है, वे छोटा सोच रहे हैं। वे 50 लाख रुपये का क्या करेंगे? मेरी राय में यह कोई वास्तविक सजा नहीं है।' शाहिद अफरीदी का मानना है कि खराब प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को घरेलू क्रिकेट में वापस भेजा जाना

चाहिए। उन्होंने आगे कहा, 'जिन्होंने प्रदर्शन नहीं किया उन्हें फर्स्ट-क्लास क्रिकेट खेलने के लिए भेजा जाना चाहिए। कुछ खिलाड़ी ऐसे हैं जिन्हें अगले दो साल तक टीम में वापस नहीं आना चाहिए। आराम की जरूरत वालों को आराम दें लेकिन जुर्माना लगाना सही नहीं है।'

आकाश चोपड़ा ने उठाए निष्पक्षता पर सवाल

भारतीय कमेंटेटर आकाश चोपड़ा ने भी पीसीबी को आड़े हाथों लिया। उन्होंने तर्क दिया कि यह उन खिलाड़ियों के साथ अन्याय है जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया या जिन्हें खेलने का मौका ही नहीं मिला। आकाश चोपड़ा ने कहा, 'साहिबजादा फरहान सोच रहे होंगे, 'मैंने सबसे ज्यादा रन बनाए और दो शतक लगाए मेरी क्या गलती है?' वहीं नसीम शाह सोच रहे होंगे, 'भाई, मैंने तो सिर्फ एक मैच खेला!' क्या यह सिर्फ किसी भी तरह से पैसे ऐंठने का तरीका है? आप चयनकर्ताओं पर सवाल उठाएं लेकिन पैसे वसूलने का यह तरीका बहुत कैजुअल है।' खबरों की मानें तो यह जुर्माना भारत के खिलाफ मिली हार के बाद ही तय कर लिया गया था। हालांकि तब यह विचार था कि यदि टीम सेमीफाइनल तक पहुंच जाती है तो इसे माफ कर दिया जाएगा। अब जब टीम सुपर 8 से आगे नहीं बढ़ सकी तो बोर्ड इस सख्त कदम को लागू करने की तैयारी में है। पूर्व विकेटकीपर राशिद लतीफ ने तो मजाक में यहां तक कह दिया कि टूर्नामेंट में पाकिस्तान के टॉप परफॉर्मर रहे साहिबजादा फरहान को बाकी खिलाड़ियों से वसूला गया जुर्माना इनाम के तौर पर दे देना चाहिए।

RCB के फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी, चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेले जाएंगे आईपीएल के मैच, मिला एक और नया होम ग्राउंड

एजेंसी बेंगलुरु

आईपीएल की मौजूदा चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। लंबे समय से चल रही अटकलों को खत्म करते हुए आरसीबी ने मंगलवार को अपने घरेलू मैदानों की आधिकारिक घोषणा कर दी है। टीम इस सीजन में अपने पांच घरेलू मैच एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम पर खेलेगी जबकि बाकी दो मैच रायपुर के शहीद वीर नारायण सिंह इंटरनेशनल स्टेडियम में आयोजित किए जाएंगे।

पिछले साल खिताब जीतने के बाद जश्न के दौरान चिन्नास्वामी स्टेडियम में मची भगदड़ में 11 लोगों की मौत हो गई थी। इस दुखद घटना के बाद से वहां एक भी घरेलू मैच नहीं खेला गया था जिससे इस साल मैचों के आयोजन को लेकर गहरा संशय बना हुआ था। सुरक्षा कारणों से यह कयास लगाए जा रहे थे कि शायद चैंपियन टीम को अपने घरेलू मैदान से दूर रहना पड़े।

महीनों की अनिश्चितता के बाद आरसीबी प्रबंधन ने स्पष्ट किया कि प्रशासन के साथ मिलकर सुरक्षा इंतजामों को पुख्ता किया गया है। आरसीबी ने अपनी विज्ञप्ति में कहा, 'महीनों की कड़ी मेहनत और सभी संबंधित पक्षों के साथ बेहतर समन्वय के बाद यह संभव हो पाया है। हम इस सहयोग के लिए कर्नाटक सरकार,कर्नाटक प्रदेश क्रिकेट संघ (KSCA) और कर्नाटक पुलिस के विशेष रूप से शुक्रगुजार हैं।'

बेंगलुरु के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के रायपुर को भी आरसीबी के मैचों की मेजबानी मिली है। रायपुर के शहीद वीर नारायण सिंह स्टेडियम में दो मैच खेले जाएंगे जिससे वहां के फैंस को भी डिफेंडिंग चैंपियन को लाइव देखने का मौका मिलेगा।

व्यापार

भारत या चीन ? जानें ईरान-इजरायल युद्ध लंबा चला तो किसके तेल की टंकी पहले होगी खाली

एजेंसी नई दिल्ली

ईरान-इजरायल युद्ध खाड़ी के कई देशों तक पहुंच गया है। इससे मिडिल ईस्ट में काफी तनाव पैदा हो गया है। इसका असर भारत और चीन समेत एशिया के कई देशों पर भी पड़ सकती है। दरअसल, इस युद्ध के कारण कच्चे तेल की आपूर्ति को लेकर दुनियाभर में चिंता बढ़ गई है। विश्लेषकों के मुताबिक, अगर यह युद्ध लंबा चलता है तो भारत पर इसका असर कुछ ज्यादा दिखाई दे सकता है।

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है। साथ ही भारत तेल का बड़ा उपभोक्ता भी है। जनवरी के आंकड़ों के अनुसार भारत रोजाना करीब 27.4 लाख बैरल कच्चा तेल मीडिल ईस्ट से आयात कर रहा था, जो उसके कुल आयात का लगभग 55% है। करीब 50% भारतीय कच्चा तेल आयात होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) से होकर गुजरता है। इस रास्ते से वैश्विक तेल आपूर्ति का लगभग पांचवां हिस्सा तेज गुजरता है।

रॉयटर्स के अनुसार चीन के पास कम से कम छह महीने का कच्चा तेल भंडार मौजूद है। इसके मुकाबले भारत का स्टॉक काफी कम है।

एनर्जी रिसर्च ग्रुप ICIS के एनर्जी एंड रिफाइनिंग डायरेक्टर अजय परमार के अनुसार, चीन के पास भंडारण में कम से कम छह महीने की आपूर्ति है, जबकि भारत का इन्वेंटरी स्तर काफी कम है, जिससे मौजूदा स्थिति में भारत अधिक संवेदनशील है।

पिछले महीने केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा था कि भारत के पास लगभग 74 दिनों की मांग पूरी करने लायक कच्चे तेल और ईंधन का भंडार है। वहीं केप्लर के मुताबिक भारत के पास 40 से 45 दिन का तेल भंडार है। केप्लर का कहना है कि रिफाइंड प्रोडक्ट (डीजल, पेट्रोल आदि) के अतिरिक्त स्टॉक से यह समय कुछ और बढ़ सकता है।

अगर मिडिल ईस्ट में तनाव लंबे समय तक जारी रहता है और तेल की आपूर्ति बाधित होती है तो इसके लिए भी सरकार ने प्लान बना रखा है। तेल मंत्रालय ने कहा है कि सरकार उचित कीमतों पर ईंधन उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएगी। यानी भारत दूसरे देशों से तेल खरीद बढ़ा सकता है। हॉर्मुज जलडमरूमध्य लंबे समय तक बंद रहता है, तो भारत पश्चिम अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, अमेरिका और रूस से अतिरिक्त आपूर्ति ले सकता है। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ नीति को लेकर अनिश्चितता के कारण भारत-अमेरिका तेल समझौता फिलहाल अधर में है। विश्लेषकों का कहना है कि अरब सागर में तैर रहे रूसी कार्गो को भी जरूरत पड़ने पर भारत अपनी तरफ बुला सकता है।

अमेरिका को कितनी महंगी पड़ रही ईरान के खिलाफ जंग, देख लीजिए पाई-पाई का हिसाब

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका/इजरायल और ईरान के बीच चल रही जंग का आज चौथा दिन है। दोनों पक्षों ने एकदूसरे के ठिकानों पर सैन्य कार्रवाई तेज कर दी है और यह जंग अब खाड़ी के पूरे इलाके में फैल गई है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि ईरान के खिलाफ ऑपरेशन कम से कम चार हफ्ते तक चल सकता है। साथ ही उनका कहना है कि अमेरिका के पास इतने हथियार हैं कि वह हमेशा लड़ाई लड़ सकता है। सवाल यह है कि अमेरिका को यह लड़ाई कितनी महंगी पड़ रही है?

तुर्की की Anadolu न्यूज एजेंसी के मुताबिक अमेरिका ने ईरान के खिलाफ ऑपरेशन एपिक फ्यूरी के तहत पहले 24 घंटे में करीब 779 मिलियन डॉलर यानी करीब 71,71,83,11,792 रुपये खर्च किए। इसी तरह अलजजीरा की एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका ने ईरान के खिलाफ हमले से पहले सैन्य तैयारियों पर 630 मिलियन डॉलर खर्च किए थे। इसमें

एयरक्राफ्ट की रीपोजीशनिंग, एक दर्जन से अधिक नौसैनिक जहाजों और रीजनल एसेट्स की तैनाती शामिल है।

डिएगो गार्सिया में F-16, इजरायल में F-22, मार्को रूबियो ने 'गैंग ऑफ 8' को दी ब्रीफिंग, ईरान पर हमले की हलचल तेज

किस पर कितना खर्च? Anadolu के मुताबिक शुरुआती खर्च में सबसे ज्यादा हिस्सेदारी फाइटर एयरक्राफ्ट की तैनाती की रही। ईरान के खिलाफ शुरुआती हमलों में एफ-18, एफ-16, एफ-22 और एफ-35 फाइटर विमानों का यूज किया गया। शुरुआती अनुमान के मुताबिक इस पर करीब 271.34 मिलियन डॉलर का खर्च आया। इन विमानों के साथ-साथ कई खास तरह के एयरक्राफ्ट्स का भी यूज किया गया। इनमें ईए-18जी ग्राउलर इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर एयरक्राफ्ट, ए-10सी थंडरबोल्ट अटैक विमान और एमक्यू-9 रीपर ड्रोन और अनमैन्ड काम्बैट अटैक सिस्टम शामिल हैं।

PRIME कंपनी ने पुणे में खरीदी 11 लाख वर्गफुट की प्रॉपर्टी, 1000 करोड़ में हुआ सौदा

एजेंसी नई दिल्ली

कमर्शियल रियल एस्टेट फोकस्ड फंड प्राइम ऑफिसेज फंड (PRIME) ने पुणे के खराड़ी इलाके में करीब 11 लाख वर्गफुट में फैली एक प्रॉपर्टी खरीदी है। यह एक प्रीमियम ऑफिस एसेट है। प्राइम ऑफिसेज फंड नुवामा और कुशमैन एंड वेकफील्ड मैनेजमेंट (NCW) द्वारा प्रबंधित है।

यह संपत्ति टेनस्टेप्स (TenSteps) नाम से जानी जाती है। इस अधिग्रहण के साथ PRIME ने अपने तीसरे शहर में प्रवेश किया है। यह अधिग्रहण एक जॉइंट वेंचर (JV) के माध्यम से हुआ है। इकनॉमिक टाइम्स के मुताबिक इसमें PRIME की हिस्सेदारी 51% है। शेष हिस्सा केपेल (Keppel) के पास है। सूत्रों के अनुसार इस सौदे का मूल्य करीब 1000 करोड़ रुपये है। हालांकि फंड ने आधिकारिक तौर पर कीमत पर कोई बयान नहीं दिया है। इस लेन-देन के बाद PRIME का कुल पोर्टफोलियो (दिल्ली-एनसीआर, चेन्नई और पुणे) करीब 38 लाख वर्गफुट हो जाएगा। वहीं NCW का कुल ग्रॉस एसेट वैल्यू (GAV) अब 4000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। यह सौदा प्रमुख ग्रोथ मार्केट्स में अनुशासित पूंजी निवेश और हाई क्वालिटी वाली ग्रेड-A+ एसेट पर फोकस की रणनीति के अनुरूप है। पुणे ऐसा बाजार है, जहां हम निवेशकों के लिए दीर्घकालिक मांग और मूल्य निर्माण देखते हैं। भारत के ऑफिस बाजार में संस्थागत निवेशकों की रुचि लगातार बढ़ रही है। पुणे वर्तमान में टेक्नोलॉजी और ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) के एक बड़े केंद्र के रूप में उभरा है। बुनियादी ढांचे में सुधार और टेक कंपनियों की निरंतर मांग के कारण, पुणे के सूक्ष्म बाजार (micro-markets) संस्थागत निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद, बड़े पैमाने और मजबूत स्पॉन्सर वाले ऑफिस एसेट्स में लंबी अवधि की पूंजी का निवेश जारी है।

कहीं तरबूज तो कहीं टमाटर वाली होली, जानें दुनियाभर में कैसे-कैसे मनाते हैं होली, जानकर रह जाएंगे दंग

दो दिनों तक चलने वाला त्योहार होलिका दहन से शुरू होता है। इसके अगले दिन रंगोत्सव मनाया जाता है। देशभर में कहीं पानी से, कहीं रंगों से, कहीं लाठी से, तो कहीं कुर्ता फाड़ होली मनाई जाती है। वहीं, दुनिया भर के अलग-अलग हिस्सों में भी होली का त्योहार अनोखे तरीके से मनाया जाता है। कहीं तरबूजों की नदियां बहती हैं, तो कहीं एक दूसरे पर टमाटर फेंके जाते हैं। इसी प्रकार कई रोचक तरीकों से धूमधाम से होली का त्योहार मनाया जाता है जो हैरान कर देने वाला होता है। आइए विस्तार से जानते हैं कि दुनियाभर में किस-किस तरीके से होली खेली जाती है।

स्पेन में टमाटरों वाली होली 'ला टोमाटीना' नामक त्योहार धूमधाम से स्पेन में मनाया जाता है। इस पर्व में एक दूसरे को टमाटर मारकर होली खेली जाती है। यहां दूर-दूर से लोग टमाटर होली खेलने आते हैं और कई किलोग्राम टमाटर से यहां धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है। यह फेस्टिवल अगस्त के अंतिम शनिवार के दिन मनाया जाता है। जिसे दुनिया का सबसे बड़ा टमाटर उत्सव भी कहा जाता है।

थाईलैंड में पानी वाली होली यहां सोंगकरन पर्व में सभी लोग एक तालाब के पास इकट्ठा होते हैं। वहां, एक-दूसरे पर पानी फेंकते हैं और खूब मस्ती करते हैं। कुछ लोगों का ग्रुप मिलकर एक व्यक्ति के तालाब में डुबकी लगवाता है। इस दिन लोग एक दूसरे को नववर्ष की बधाई देते हैं। वहीं, अप्रैल में गर्मी होने से पानी वाला यह त्योहार राहत देने वाला होता है।

न्यूजीलैंड की अनोखी होली हर साल न्यूजीलैंड में वानका उत्सव मनाया जाता है। इसमें एक पार्क में छोटे से लेकर बूढ़े लोग भी इकट्ठा होते हैं। वहां, सभी एक दूसरे के शरीर पर पेंटिंग लगाते हैं। इसकी एक प्रतियोगिता भी रखी जाती है। साथ ही, इस रंगीले त्योहार में जमकर नाच-गाना भी किया जाता है। न्यूजीलैंड का यह पर्व लगातार 6 दिनों तक मनाया जाता है।

चीन की मस्ती भरी होली नववर्ष के मौके पर चीन में 'डाए' नामक एक समुदाय भारत की तरह ही धूमधाम से होली का त्योहार मनाते हैं। इस दिन ये लोग एक दूसरे पर पानी फेंकते हैं। साथ ही, गाना बजाना के साथ खूब मस्ती होती है। लोग इस दिन एक दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए नजर आते हैं।

जापान में फूलों वाली होली मार्च-अप्रैल के महीने में जापान में 'चेरी ब्लॉसम उत्सव' मनाया जाता है। इस समय जापान में चेरी के पेड़ में फूल आने का मौसम होता है। ऐसे में सभी लोग अपने परिवार के साथ चेरी के बागों में एक दूसरे को बधाई देते हैं। वहां, लोग पेड़ से गिर रहे फूलों के साथ सभी का स्वागत करते हैं। यह त्योहार नाचने गाने के साथ पूरे दिन मनाया जाता है।

ऑस्ट्रेलिया में तरबूजों वाली होली

यहां 'चिनचिला मेलन फेस्टिवल' मनाया जाता है। जिसमें हर जगह केवल तरबूज ही तरबूज नजर आते हैं। आस्ट्रेलिया में बहुत अनोखे तरीके से यह उत्सव मनाया जाता है। इस फेस्टिवल के दौरान कई और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसमें लोग आगे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। होली में जिस तरह हर जगह रंग दिखाई देते हैं, उसी तरह ऑस्ट्रेलिया में हर जगह तरबूज नजर आते हैं।

शादी के बाद दुल्हन पहली होली मायके में क्यों मानती है ? क्या है इस परंपरा के पीछे का कारण

वर्षों से जो परंपरा चली आ रही है, उसके पीछे कोई ना कोई आधार जरूर रहता है। होली के अवसर पर जानेंगे कि नई दुल्हन अपनी पहली होली मायके में क्यों मानती है। त्योहार के दिन उसका पति ससुराल जाकर उसके साथ होली क्यों खेलता है और कुछ दिन बाद उसे ससम्मान विदा करके अपने साथ ले आता है।

दामाद की पहली होली ससुराल में मनाना भी विशेष महत्व रखता है। दामाद के स्वागत में होली के अवसर पर विशेष पकवान बनाए जाते हैं, हंसी-ठठेली होती है, रिश्तो में आत्मीयता आती है, पति-पत्नी के बीच कुछ दिनों की दूरी प्रेम को और प्रगाढ़ बना देती है, पुनर्मिलन का आनंद रिश्तो में नई ताजगी भर देता है। पुराने समय में परिवहन की सुविधा सीमित थी और बेटियों को मायके आना-जाना कम हो पता था, इसलिए भी त्योहार के अवसर पर उन्हें बुलाने की परंपराएं विकसित होती चली गई।

पौराणिक संदर्भों पर ध्यान दे तो, हम लोगों ने बचपन से ही होलिका दहन की प्रसिद्ध कथाएं सुनी हैं, जिसमें प्रहलाद के पिता हिरण्यकश्यप स्वयं को भगवान समझते थे और वह चाहते थे कि उनकी प्रजा उन्हें भगवान की तरह पूजे। परंतु ईश्वर की ऐसी लीला हुई की हिरण्यकश्यप के घर में विष्णु भगवान का भक्त प्रहलाद के रूप में जन्मा। प्रहलाद को बहुत समझाया गया कि अपने पिता को भगवान माने, परन्तु उसने मानने से इन्कार कर दिया, तो उसे कई बार मृत्यु की गोद में भेजने का प्रयास किया गया, ईश्वर की कृपा से हर बार प्रहलाद बच जाता था।

कहा जाता है कि हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से सहायता ली जिसे अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था। कहीं-कहीं पर यह भी वर्णन आता है कि होलिका के पास एक दिव्य वस्त्र था जिसे वह जब ओढ़कर अग्नि में बैठती थी तो अग्नि उसे जला नहीं पाती थी। कहा जाता है, ईश्वर की ऐसी लीला हुई कि वह दिव्य वस्त्र उड़कर प्रहलाद पर आ गिरा और होलिका स्वयं जल के भस्म हो गई। इसके बाद कहा जाता है कि जिस दिन होलिका जलकर भस्म हुई थी उस दिन उसका विवाह होना था। जब बारात पहुंची तो वधू होलिका की चिता जलते देखा तो शोक एवं मातम छा गया। तभी से यह मान्यता बनी कि नई बहू को पहली होली ससुराल में नहीं मनानी चाहिए अन्यथा अशुभ फल हो सकता है। होलाष्टक से पहले नई नवेली दुलहन अपने मायके पहुंच जाती है तथा होली उत्सव सम्पन्न होने के बाद ही पति के साथ वापस ससुराल आती है।

सामाजिक भेदभाव मिटाने वाले इस पर्व का क्या है महत्व

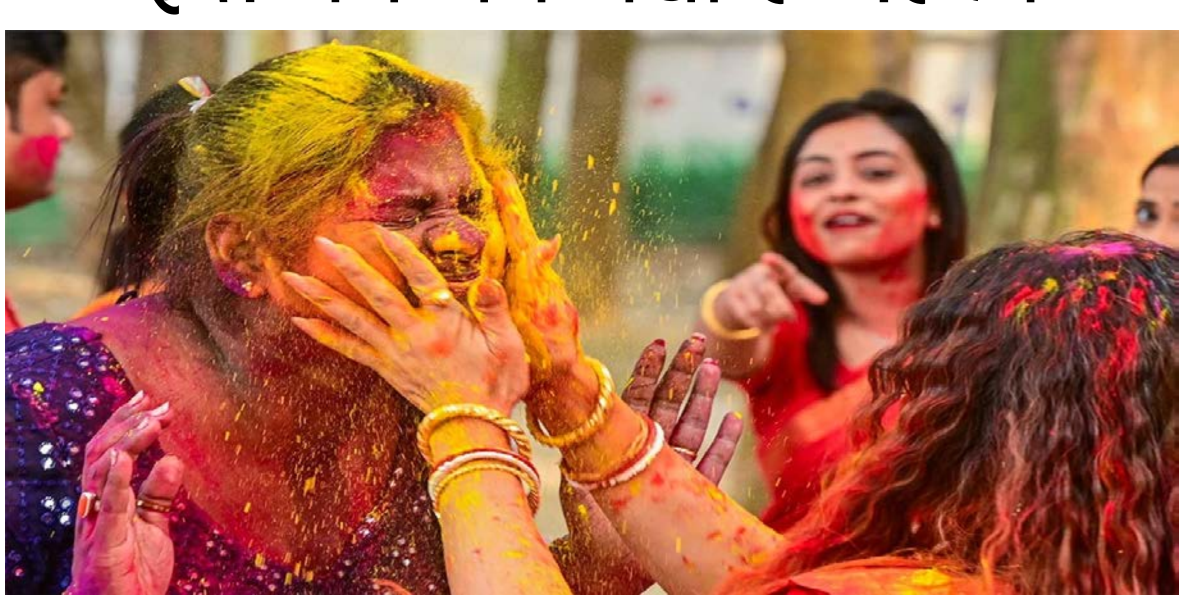

वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला महत्वपूर्ण त्योहार है होली। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को पड़ने वाला रंगों का यह त्योहार सामाजिक भेदभाव को मिटाकर सबको गले मिलने का अवसर उपलब्ध कराता है। इस दिन हर वर्ग के लोग टोलियां बनाकर अपने घर से निकलते हैं और दूसरों के घर जाकर रंग लगाते हैं, मिठाई खाते, खिलाते हैं और एक दूसरे को शुभकामनाएं प्रदान करते हैं। कई जगह तो इन टोलियों की ओर से सांस्कृतिक आयोजन भी किये जाते हैं। यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है। दूसरे दिन, जिसे धुलेंडी कहा जाता है, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं और ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं। होली पर्व के आने की सूचना होलाष्टक से प्राप्त होती है, होलाष्टक को होली पर्व की सूचना लेकर आने वाला एक हरकारा कहा जा सकता है। होली ब्रज क्षेत्र में तो पूरे 9 दिनों के त्योहार के रूप में मनाई जाती है। धुलेंडी के दिन रंग और गुलाल के साथ इस पर्व का समापन होता है। होली के इन 9 दिनों का उल्लास और मस्ती ब्रज क्षेत्र में देखते ही बनती है। बरसाने की लठमार होली काफी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएं उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। मथुरा और वृंदावन में तो 15 दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है। होली में जिस तरह रंगों की विभिन्नता देखने को मिलती है उसी प्रकार इसको मनाये जाने के प्रकार में भी देश के विभिन्न प्रांतों में भिन्नता देखने को मिलती है। इस दिन उत्तराखंड के कुमाऊं की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं तो हरियाणा में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने का सब आनंद लेते हैं। महाराष्ट्र में सूखा गुलाल खेलने और गोवा में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है तथा पंजाब में होला मोहल्ला में सिखों की ओर से शक्ति प्रदर्शन किये जाने की परंपरा है। छत्तीसगढ़ की होरी में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्य प्रदेश के मालवा अंचल तथा दक्षिण गुजरात के आदिवासी इलाकों में यह पर्व बेहद धूमधाम से मनाया जाता है। बिहार में फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है। दिल्ली और आसपास के इलाकों में इस दिन डीजे और ढोल की थापों पर लोग नाचते गाते और एक दूसरे को गुजिया खिलाते नजर आते हैं। बंगाल में होली को 'डोल यात्रा' व 'डोल पूर्णिमा' कहते हैं और होली के दिन श्री राधा और कृष्ण की प्रतिमाओं को डोली में बैठाकर पूरे शहर में घुमाया जाता है। बंगाल में होली को 'बसंत पर्व' भी कहते हैं। इसकी शुरुआत रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन में की थी। ओडिशा में भी होली को 'डोल पूर्णिमा' कहते हैं और इस दिन भगवान जगन्नाथ जी की डोली निकाली जाती है। राजस्थान में मुख्यतः तीन प्रकार की होली होती है। माली होली- इसमें माली जात के मर्द, औरतों पर पानी डालते हैं और बदले में औरतें मर्दों की लाठियों से पिटाई करती हैं। इसके अलावा गोदाजी की गैर होली और बीकानेर की डोलची होली भी काफी चर्चित हैं। कर्नाटक में यह त्योहार कामना हब्बा के रूप में मनाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान शिव ने कामदेव को अपने तीसरे नेत्र से जला दिया था। इस दिन कूड़ा-करकट फटे वस्त्र, एक खुली जगह एकत्रित किए जाते हैं तथा इन्हें अग्नि को समर्पित किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस पर्व से सामाजिक जुड़ाव काफी गहरा देखने को मिलता है क्योंकि होली के पंद्रह बीस दिन पहले से ही गोबर के पतले पतले उपले और अंजुलि के आकार की गुलेरियां बनाना प्रारम्भ हो जाता है। इनके बीच में बनाते समय ही उंगलि से एक छेद बना दिया जाता है। इनके सूख जाने पर इन्हें रस्सियों में पिरोकर मालाएं बनाई जाती हैं। होलिका दहन के दो तीन दिन पूर्व खुले मैदानों और अन्य निर्धारित स्थानों पर होली के लकड़ी कण्डे आदि रखना प्रारम्भ कर दिया जाता है। उनमें ही रख दी जाती हैं मालाएं। अनेक क्षेत्रों में इन सामूहिक होलिकाओं के साथसाथ एक मकान में रहने वाले सभी परिवार मिलकर अतिरिक्त रूप से भी होलियां जलाते हैं। होली की अग्नि में पौधों के रूप में उखाड़े गए चने, जौ और गेहूं के दाने भूनकर परस्पर बांटने की भी परम्परा है। होलिका दहन तो रात्रि में होता है, परन्तु महिलाओं द्वारा इस सामूहिक होली की पूजा दिन में दोपहर से लेकर शाम तक की जाती है। महिलाएं एक पात्र में जल और थाली में रोली, चावल, कलावा, गुलाल और नारियल आदि लेकर होलिका माई की पूजा करती हैं। इन सामग्रियों से होली का पूजन किया जाता है और जल चढ़ाया जाता है। होलिका के चारों ओर परिक्रमा देते हुए सूत लपेटा जाता है। शास्त्रों के अनुसार भद्रा नक्षत्र में होलिका दहन पूर्णतया वर्जित है। इस दिन पुरुषों को भी हनुमानजी और भगवान भैरवदेव की विशिष्ट पूजा अवश्य करनी चाहिए। प्रत्येक स्त्री पुरुष को होलिका दहन के समय आग की लपटों के दर्शन करने के बाद ही भोजन करना चाहिए।

आर्थिक राशिफलः बुधवार को कन्या और तुला को धन के मामले में रहना होगा सतर्क

मेष राशि कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत की तारीफ होगी, लेकिन आपको लगेगा कि बाकी लोग आपकी जितनी कोशिश नहीं कर रहे हैं। दूसरों से उम्मीद कम रखें और अपने काम की मेहनत पर ध्यान दें। ऑफिस की राजनीति से दूर रहें और किसी भी ईमेल को भेजने से पहले दो बार चेक करें। आर्थिकः आज धन के मामले में सावधानी बरतें। कुंभ राशि के ग्रहों का प्रभाव आपको दिखावे के लिए पैसा खर्च करने पर मजबूर कर सकता है। दोस्तों की सलाह पर कोई बड़ा निवेश न करें, क्योंकि अभी ग्रहों की स्थिति भ्रम पैदा करने वाली है। बचत पर ध्यान दें।

वृष राशि कार्यक्षेत्र में आपकी ऊर्जा बहुत ज्यादा रहेगी, लेकिन मंगल-राहु की युति आपको दूसरों के प्रति कठोर बना सकती है। सहकर्मियों के साथ तालमेल बढ़ाने की कोशिश करें। अपनी योजनाओं को अभी गुप्त रखें, क्योंकि बुधदेव के वक्री होने से लोग आपकी रणनीतियां चुरा सकते हैं। आर्थिकः धन भाव में गुरुदेव की वक्री स्थिति बताती है कि पुराने निवेश से लाभ होने में देरी हो सकती है। होली के जोश में आकर अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च न करें। आज किसी को उधार देना आपके लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है, इसलिए अपने हाथ खींचकर रखें।

मिथुन राशि कार्यक्षेत्र में आज चीजें थोड़ी धीमी गति से चलेंगी। शनिदेव और शुक्रदेव की मौजूदगी बताती है कि आपको अपने काम में "परफेक्शन" लाने की जरूरत है। कोई सीनियर अधिकारी आपको सलाह दे सकता है, जिसे नजरअंदाज न करें; यह आपकी भविष्य की तरक्की के लिए जरूरी है। आर्थिकः आपकी राशि में वक्री गुरुदेव होने के कारण धन का आगमन थोड़ा धीमा हो सकता है। आज भारी खरीदारी या निवेश से बचना ही समझदारी है। होली के खर्चों का हिसाब आज शाम को बैठ कर करें, इससे आपको भविष्य की प्लानिंग में मदद मिलेगी।

कर्क राशि करियर के मामले में आज का दिन रिसर्च और प्लानिंग का है। अगर आप राइटिंग, मीडिया या सेल्स के क्षेत्र में हैं, तो आज का दिन व्यस्त रहेगा। वक्री बुधदेव की वजह से कोई ईमेल या मैसेज गलत व्यक्ति को जा सकता है, इसलिए 'सेंड' बटन दबाने से पहले दोबारा जांच लें। आर्थिकः पैसे के मामले में आज का दिन रुक कर देखने वाला रहेगा। केतु का दूसरे भाव में होना जमा धन को लेकर थोड़ी अनिश्चितता पैदा कर सकता है। निवेश के बड़े फैसले आज टाल दें और अपनी कीमती चीजों को संभाल कर रखें।

सिंह राशि बिजनेस करने वालों के लिए आज का दिन ग्राहकों से बातचीत करने का है, लेकिन भाषा में नरमी रखें। अगर आप जॉब में हैं, तो काम का बोझ थोड़ा ज्यादा लग सकता है। सहकर्मियों के

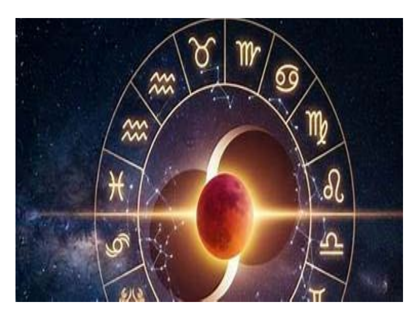

साथ तालमेल बढ़ाने की कोशिश करें, क्योंकि आज कोई आपकी बात का गलत मतलब निकाल सकता है। आर्थिकः धन के मामले में आज का दिन मिला-जुला है। एक तरफ आप बचत की सोचेंगे, तो दूसरी तरफ वक्री बुधदेव कोई पुराना खर्चा सामने ला सकते हैं। आज किसी भी नए पार्टनरशिप एग्रीमेंट पर साइन न करें और अपनी कीमती चीजों का ध्यान रखें।

कन्या राशि करियर के लिहाज से आज का दिन पुराने कामों को दोबारा चेक करने का है। अगर आप कोई रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं, तो उसमें गलती होने की संभावना है, इसलिए दो बार चेक करें। नए आइडियाज पर काम करने के बजाय पुराने प्रोजेक्ट्स को बेहतर बनाने पर ध्यान दें। आर्थिकः पैसे के मामले में आज का दिन सामान्य है। गुरुदेव की वक्री स्थिति के कारण हो सकता है कि काम से मिलने वाला पैसा थोड़ा रुक कर आए। आज फिजूलखर्ची से बचें, खासकर जड़ी-बूटियों या सेहत से जुड़ी चीजों पर जल्दबाजी में बड़ा खर्च न करें।

तुला राशि करियर के मामले में आज नए आइडियाज तो बहुत आएंगे, लेकिन उन्हें जमीन पर उतारने में जल्दबाजी न करें। वक्री बुधदेव के कारण प्लान में अचानक बदलाव हो सकता है। अगर आप आर्ट, डिजाइन या मीडिया से जुड़े हैं, तो आज का दिन भविष्य की योजना बनाने के लिए बहुत अच्छा है। आर्थिकः पैसे के मामले में आज का दिन संभलकर चलने का है। नौवें भाव में वक्री गुरुदेव बड़े लाभ मिलने में देरी करा सकते हैं। होली के उल्लास में आकर बहुत महंगी चीजें न खरीदें। निवेश के लिए अभी समय सही नहीं है, बस अपनी बचत पर बारीकी से नजर रखें।

वृश्चिक करियर के मामले में आज का दिन नेटवर्किंग और संपर्क बढ़ाने का है। ऑफिस की गंभीर बातों को आज साइड में रखें और लोगों से संबंध बनाने पर ध्यान दें। मीडिया, मार्केटिंग या कम्युनिकेशन से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन कोई अच्छी खबर ला सकता है। आर्थिकः आठवें भाव में वक्री गुरुदेव के कारण रुका हुआ धन मिलने में थोड़ी देरी हो सकती है। हालांकि, ग्यारहवें भाव के चंद्रमा आपको लाभ के नए रास्ते दिखाएंगे। आज होली के उपहारों के रूप में कुछ आर्थिक लाभ संभव है। निवेश के लिए दिन बढ़िया रहेगा।

धनु राशि करियर के लिहाज से आज का दिन नई रणनीतियां बनाने का है। अगर आप बिजनेस में हैं, तो आज आपको कोई नया आइडिया या बेहतरीन आइडिया मिल सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिए आज अपनी प्रोफेशनल इमेज और साख सुधारने का बहुत अच्छा मौका है।

आर्थिकः आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी, लेकिन घर की सुख-सुविधाओं पर खर्च बढ़ सकता है। चौथे भाव में शनि-शुक्र की युति बताती है कि आप घर की साज-सज्जा पर धन खर्च कर सकते हैं। आज किसी को उधार देने से बचें, वरना पैसा वापस आने में लंबा समय लग सकता है।

मकर राशि करियर के मामलों में आज का दिन नई चीजें सीखने और खुद को अपडेट करने का है। अगर आप शिक्षा या कानूनी क्षेत्र से जुड़े हैं, तो आज का दिन लाभकारी रहेगा। ऑफिस की पॉलिटिक्स से पूरी तरह दूर रहें और अपना ध्यान केवल अपने लक्ष्यों को पूरा करने पर केंद्रित रखें। आर्थिकः पैसों के मामले में आज थोड़ा हाथ खींचकर चलें। कुंभ राशि के ग्रह आपको अचानक और बड़ी खरीदारी के लिए उकसा सकते हैं। वक्री बुधदेव के कारण बैंकिंग एप्स या ऑनलाइन ट्रांजैक्शन में सावधानी बरतें। पुराने निवेश से जुड़ा कोई मामला आज दोबारा सामने आ सकता है।

कुंभ राशि करियर के लिए आज का दिन नए प्लान बनाने का है। आपकी राशि के ग्रह आपको लीडरशिप का मौका देंगे, लेकिन वक्री बुधदेव की वजह से नए काम शुरू करने के बजाय पुराने पेंडिंग कामों को सुधारना बेहतर होगा। टेक्निकल या रिसर्च फील्ड के लोगों के लिए आज का दिन सफल रहेगा।

आर्थिकः पैसे के मामले में आज आप थोड़े चिंतित रह सकते हैं। शुक्रदेव और शनिदेव की स्थिति आपको बचत करने की प्रेरणा देगी। आज कोई बड़ा निवेश न करें और न ही किसी को पैसा उधार दें। अपने कीमती सामान जैसे फोन या डेस्क को संभाल कर रखें।

मीन राशि करियर के मामले में आज आप पर्दे के पीछे रहकर काम करना ज्यादा पसंद करेंगे। अगर आप कला, लेखन या किसी सामाजिक संस्था से जुड़े हैं, तो आज का दिन आपके लिए क्रिएटिव रहेगा। कोई भी नया प्रोजेक्ट शुरू करने से पहले अच्छी तरह रिसर्च कर लें, क्योंकि जानकारी अधूरी हो सकती है। आर्थिकः धन के मामले में आज थोड़ा संभलकर चलें। बारहवें भाव के ग्रह अचानक होने वाले खर्चों का संकेत दे रहे हैं। संपत्ति या जमीन से जुड़े मामलों में अभी कोई बड़ा आर्थिक फैसला न लें, क्योंकि गुरुदेव वक्री हैं। खरीदारी करते समय अपने बजट की सीमा को न लांघें।

राहु केतु चंद्रमा को क्यों लगाते हैं ग्रहण, जानें क्या है चंद्रग्रहण की पौराणिक कथा

पहला चंद्रग्रहण इसकी शुरुआत दोपहर में 3 बजकर 20 मिनट से होगी और समापन शाम को 6 बजकर 47 मिनट पर होगा। भारत में भी चंद्रग्रहण का प्रभाव देखने को मिलेगा। ऐसे में इससे जुड़े नियमों का ख्याल रखना आवश्यक रहेगा। ज्योतिषशास्त्र में चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण को अशुभ माना जाता है। पौराणिक कथा और मान्यताओं के अनुसार, राहु और केतु जो की छाया ग्रह हैं वे चंद्रमा को ग्रसित करते हैं। जिसके चलते ग्रहण लगता है। आइए विस्तार से जानते हैं चंद्रग्रहण की पौराणिक कथा। चंद्रग्रहण की पौराणिक कथा चंद्रग्रहण लगने के पीछे का कारण एक पौराणिक कथा में बताया गया है। मान्यता है की समुद्र मंथन के समय जब अमृत का कलश बाहर निकला तो उसे देवताओं में बांटने के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण किया था। जब विष्णुजी सभी देवताओं को मोहिनी रूप में एक-एक करके अमृत बांट रहे थे तो एक असुर भी वहां देवता का रूप धारण करके पंक्ति में जाकर खड़ा हो गया।सुदर्शन चक्र से अलग हुआ असुर का सिर सूर्य और चंद्रमा के बीच असुर पंक्ति में चला गया। इसके

बाद, जब विष्णुजी राक्षस को अमृत पिलाते हैं तभी सूर्य और चंद्रमा असुर को पहचान लेते हैं और मोहिनी को रोक देते हैं। लेकिन इतनी देर में अमृत असुर के गले तक चला गया था, तो मोहिनी का रूप धारण किए हुए विष्णु भगवान जी ने अपने सुदर्शन चक्र से असुर की गर्दन को अलग कर दिया। लेकिन क्योंकि असुर ने अमृत पान किया था इसलिए वह जीवित रहा। इस असुर के सिर को राहु और धड़ को केतु कहा जाने लगा। राहु-केतु चंद्रमा को कर लेते हैं ग्रहण ऐसा कहा जाता है कि सूर्य और चंद्रमा के बीच ही वह असुर खड़ा हुआ था और उन्हीं की वजह से भगवान विष्णु ने असुर का सिर धड़ से अलग कर दिया था। ऐसे में राहु और केतु को जब भी मौका मिलता है वो सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण कर लेते हैं। और यही कारण है कि ग्रहण काल की अवधि को अशुभ माना जाता है। चंद्रग्रहण हमेशा पूर्णिमा तिथि पर और सूर्य ग्रहण हमेशा अमावस्या तिथि के दिन ही लगता है। जब भी ऐसी स्थिति होती है तो राहु-केतु इनके आसपास जरूर देखने मिलते हैं। समुद्र मंथन की इस कथा का वर्णन पद्मपुराण में भी देखने को मिलता है।

करोड़ों का सेतु,मगर सुरक्षा शून्य

नांदिया घाट पुल पर रेलिंग के इंतजार में 32 गांवों की सांसें अटकी

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

जनहित से जुड़ा एक गंभीर मामला इन दिनों पुनर्वास केम्प चोपना क्षेत्र में चर्चा और चिंता का विषय बना हुआ है।नांदिया घाट पर करोड़ों रुपये की लागत से निर्मित सेतु,जो 32 गांवों के लगभग 40 हजार से अधिक ग्रामीणों की जीवनरेखा माना जाता है,आज सुरक्षा व्यवस्थाओं के अभाव में हादसों का खतरा बन चुका है।सेतु निर्माण के वर्षों बाद भी दोनों ओर सुरक्षा रेलिंग नहीं लगाई गई है,जिससे रोजाना इस मार्ग से गुजरने वाले दोपहिया और चारपहिया वाहन चालकों की जान जोखिम में बनी हुई है। यह सेतु कोयलांचल क्षेत्र पाथाखेड़ा और सारनी तक पहुंचने का प्रमुख मार्ग है। पुनर्वास क्षेत्र के ग्रामीणों के लिए यही पुल रोजगार, शिक्षा,स्वास्थ्य और बाजार तक पहुंच का एकमात्र सुगम रास्ता है।सुबह मजदूरी के लिए निकलने वाले श्रमिकों से लेकर स्कूल जाने वाले छात्र और मरीजों को अस्पताल ले जाने वाले परिजन सभी इसी सेतु पर निर्भर हैं।लेकिन विडंबना यह है कि विकास की इस प्रतीक संरचना में सुरक्षा का सबसे बुनियादी इंतजाम ही अधूरा छोड़ दिया गया।ग्रामीणों का कहना है कि दिन के मुकाबले रात के समय यह पुल और अधिक खतरनाक हो जाता है।अंधेरे में रेलिंग न होने के कारण वाहन चालकों को पुल की सीमाएं स्पष्ट दिखाई नहीं देतीं। कई बार दोपहिया वाहन चालक संतुलन खोकर पुल से नीचे गिर चुके हैं, जिनमें कई लोग गंभीर रूप से घायल भी हुए हैं।

स्थानीय लोगों के अनुसार, "पुल बना तो उम्मीद जगी कि अब आवागमन सुरक्षित होगा,लेकिन बिना रेलिंग के यह सुविधा अब डर में बदल गई है। हर बार पुल पार करते समय दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।ग्रामीणों में इस बात को लेकर नाराजगी भी है कि जब करोड़ों रुपये खर्च कर सेतु का निर्माण किया गया,तब सुरक्षा मानकों का पालन क्यों नहीं किया गया। लोगों का कहना है कि प्रशासन और निर्माण एजेंसी की लापरवाही सीधे ग्रामीणों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रही है।पुनर्वास क्षेत्र के बुजुर्गों का कहना है कि यह पुल सिर्फ कंक्रीट का ढांचा नहीं, बल्कि गांवों की रोजमर्रा की जिंदगी की डोर है। ऐसे में सुरक्षा इंतजामों की अनदेखी समझ से परे है।

अब आंदोलन की तैयारी : लगातार बढ़ते खतरे को देखते हुए ग्रामीणों ने सेतु के दोनों ओर शीघ्र रेलिंग निर्माण की मांग तेज कर दी है। ग्रामवासियों ने निर्णय लिया है कि जल्द ही कलेक्टर एवं लोक निर्माण विभाग को लिखित शिकायत सौंपकर सुरक्षा रेलिंग लगाने की मांग की जाएगी।ग्रामीणों का साफ कहना है कि यदि समय रहते सुरक्षा व्यवस्था नहीं की गई तो किसी बड़े हादसे की जिम्मेदारी संबंधित विभाग और निर्माण एजेंसी की होगी।

जनहित का सवाल : करीब 40 हजार लोगों की आवाजाही वाले इस सेतु पर सुरक्षा इंतजामों का अभाव प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल खड़े कर रहा है। विकास तभी सार्थक माना जाएगा जब वह सुरक्षित भी हो और फिलहाल नांदिया घाट का यह सेतु इसी कसौटी पर अधूरा दिखाई दे रहा है।

आज भी खुले रहेंगे सभी सरकारी अस्पताल:मरीजों को मिलेगी OPD सुविधा, सुबह 9 बजे से 11 बजे तक रहेंगे डॉक्टर

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में होली के शासकीय अवकाश के बावजूद जिले के सभी सरकारी अस्पताल और आयुष संस्थान दो घंटे तक खुले रहेंगे। मरीजों को इलाज में दिक्कत न हो, इसके लिए यह विशेष व्यवस्था की गई है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि सभी स्वास्थ्य संस्थान सुबह 9 बजे से 11 बजे तक संचालित होंगे। इस दौरान ओपीडी सेवा चालू रहेगी और डॉक्टर व स्वास्थ्य कर्मचारी मौजूद रहेंगे।

जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने भी बताया कि आयुष विभाग के सभी केंद्र तय समय तक खुले रहेंगे। विभाग का कहना है कि त्योहार के दिन भी मरीजों को समय पर इलाज मिल सके, इसी उद्देश्य से यह व्यवस्था की गई है।

रंग बरसे की धुन पर झूमेगा शहर

सुरक्षा के साए में आज रंगों की मस्ती,हर्षोल्लास से मनाई जाएगी होली

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

पुराने हिंदी फिल्मों की मधुर धुनों रंग बरसे भीगे चुनर वाली,होली के दिन दिल खिल जाते हैं और आज ना छोड़ेंगे बस हमजोली की गूंज के बीच आज पूरे शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में रंगों का पर्व होली हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। गलियों से लेकर चौक-चौराहों तक उत्साह का माहौल है और लोग रंग,गुलाल व आपसी भाईचारे के रंग में सराबोर होने को तैयार हैं।इस वर्ष कई वर्षों बाद ऐसा संयोग बना है कि होलिका दहन के एक दिन बाद धुरेंडी (रंगोत्सव) मनाई जा रही है,जिससे लोगों में उत्सुकता और भी बढ़ गई है। हालांकि मंगलवार को पड़ने वाले चंद्र ग्रहण के प्रभाव को लेकर धार्मिक चर्चा भी क्षेत्र में बनी रही, लेकिन त्योहार के उत्साह पर इसका असर सीमित ही देखने को मिला।होली पर्व को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित वातावरण में संपन्न कराने के लिए स्थानीय पुलिस प्रशासन द्वारा व्यापक इंतजाम किए गए हैं।शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों में भी लगातार पेट्रोलिंग की जा रही है।संवेदनशील स्थानों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है ताकि किसी भी प्रकार की अवांछनीय घटना को रोका जा सके।पुलिस प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि त्योहार को पारंपरिक सौहार्द, भाईचारे और मर्यादा के साथ मनाएं तथा हुड़दंग या नशे की स्थिति में वाहन चलाने से बचें।होली केवल रंगों का त्योहार नहीं,बल्कि दिलों को जोड़ने का अवसर भी है। घरों में गुझिया और मिठाइयों की खुशबू,बच्चों की टोली की किलकारियां और युवाओं की मस्ती पूरे क्षेत्र को एक उत्सवी रंग में रंग रही है। मानो पुराने फिल्मों का वही सुनहरा दौर लौट आया हो, जब होली सिर्फ त्योहार नहीं बल्कि दिलों के मिलन का उत्सव हुआ करती थी।आज सारनी क्षेत्र में होली का रंग, संगीत और सुरक्षा तीनों मिलकर त्योहार को यादगार बनाने को तैयार हैं।

आज उड़ेगा रंग और गुलाल, 250 पुलिसकर्मी चौक पर रहेंगे तैनात

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

धुरेंडी का त्योहार बुधवार को जिले भर में मनाया जाएगा। इस पर्व को लेकर मंगलवार को बाजार में चहल- पहल रही। लोगों ने बाजार में पहुंचकर रंग, गुलाल सहित अन्य खरीददारी की। खासकर छोटे बच्चों में होली को लेकर उत्साह है। होली पर सुरक्षा को लेकर दो दिन से ही पुलिस बल को चौराहों पर लगाया गया है। शहर के प्रमुख चौक- चौराहों, बाजार क्षेत्रों, भीड़भाड़ वाले इलाकों में करीब 250 पुलिस जवानों की ड्यूटी लगाई है। हुरियारों की टोलियां सुबह से ही निकलेंगी। जिले में होली का पर्व आदिवासी समाज द्वारा 15 दिनों तक मनाया जाएगा।

खजूरी में श्रद्धा और उल्लास के साथ हुआ होलिका दहन, मांगी समृद्धि

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

गांव में पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ होलिका दहन का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के बीच हुआ। उत्सव की तैयारियां एक सप्ताह पहले ही शुरू हो गई थीं, जिनमें गांव की युवतियों ने गोबर के उपले तैयार कर सक्रिय भूमिका निभाई। सोमवार शाम निर्धारित स्थल पर विधिविधान से पूजा-अर्चना की गई। इसके बाद मंगलवार तड़के 4 बजे कोटवार ने मुनादी कर ग्रामीणों को एकत्रित होने की सूचना दी। सुबह 5 बजे बड़ी संख्या में ग्रामीणों की मौजूदगी में गांव के पटेल ने विधिवत होलिका दहन किया। इस दौरान ग्रामीणों ने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं और सुख-समृद्धि की कामना की। पूरे गांव में आस्था और उत्सव का माहौल बना रहा।

ठेकेदारों का पुतला दहन कर फूटा आक्रोश : जब चूल्हे ठंडे और जेबें खाली हुईं वेतन के इंतज़ार में ठेका मजदूरों की `काली होली हुई

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड (डब्ल्यूसीएल) पाथाखेड़ा क्षेत्र की भूमिगत खदानों में कार्यरत ठेका मजदूरों का आक्रोश अब आंदोलन की नई और भावनात्मक दिशा ले चुका है। पिछले कई महीनों से वेतन न मिलने की पीड़ा झेल रहे मजदूरों ने मंगलवार को शोषण के प्रतीक के रूप में क्षेत्र के ठेकेदारों के नाम लिखकर पुतला दहन किया और चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं हुईं तो इस वर्ष वे रंगों की नहीं बल्कि काली होली मनाने को मजबूर होंगे।26 फरवरी से जारी अनिश्चितकालीन हड़ताल अब केवल मजदूरी का संघर्ष नहीं,बल्कि मजदूरों के सम्मान,परिवार और अस्तित्व की लड़ाई बन चुकी है।भूमिगत खदानों में जोखिम भरा कार्य करने वाले ठेका मजदूरों का कहना है कि दो से तीन माह से वेतन न मिलने के कारण उनके घरों की आर्थिक व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है।कई मजदूरों ने बताया कि बच्चों की स्कूल फीस बकाया हो गई है,राशन उधार में चल रहा है,बैंक की किस्तें और घरेलू खर्च संभालना मुश्किल हो गया है,त्योहार के समय भी घरों में खुशियों की जगह चिंता का माहौल है।महिला मजदूरों ने भावुक होकर आरोप लगाया कि खातों में वेतन डालने के बाद भी ठेकेदारों द्वारा राशि वापस लेने का दबाव बनाया जाता है,जिससे मजदूर मानसिक और आर्थिक दोहरे शोषण का शिकार हो रहे हैं।मंगलवार शाम लगभग 5:30 बजे सैकड़ों मजदूर एकत्रित हुए और भूमिगत खदानों में कार्य करवाने वाले ठेकेदारों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।शोषण के विरोध में ठेकेदारों के नाम लिखे पुतलों का दहन किया गया।पूरे प्रदर्शन के दौरान स्थानीय पुलिस बल तैनात रहा और कार्यक्रम शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ।ठेका मजदूरों का कहना है कि अवैध वसूली पर पूर्ण रोक,बैंक पासबुक और एटीएम कार्ड मजदूरों को वापस दिए जाएं,दोषी ठेकेदारों पर कानूनी कार्रवाई की जाए। ठेका मजदूरों के लगातार चल रहे धरना प्रदर्शन की वजह से तवा-1, तवा-2 परियोजना तथा छतरपुर वन खदान में ठेका मजदूरों के काम पर न जाने से कोयला उत्पादन प्रभावित होने की खबरें सामने आ रही हैं। मजदूरों के आक्रामक रुख के बाद प्रबंधन भी सक्रिय होता दिखाई दे रहा है।वर्कशॉप मजदूर संगठन के पदाधिकारियों ने अधिकारियों एवं ठेकेदारों के साथ बैठक कर स्पष्ट निर्देश दिए कि भुगतान के बाद किसी भी प्रकार की राशि वापसी का दबाव पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा।ठेका श्रमिकों के प्रतिनिधि प्रदीप नागले और संतोष देशमुख के नेतृत्व में मजदूरों ने घोषणा की है कि यदि शोषण बंद नहीं हुआ तो 4 मार्च को सभी मजदूर काले वस्त्र पहनेंगे,थाना सारनी पहुंचकर लिखित शिकायत देंगे,

ठेकेदारों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की मांग करेंगे, भूमिगत खदानों में काम करने वाले ठेकेदारों पर मजदूर नेता मनोज देशमुख ने आरोप लगाते हुए जानकारी देने का काम किया कि आर.बी. मौर्या,एम.एस. दुबे,मनीष मौर्य,जे.के. जाहिल खान,इम्तियाज अहमद,चेतन गुप्ता,उस्मान, नागेंद्र,महेंद्र पवार,शिवाय ट्रेडर्स के विमलेंद्र मिश्रा, बी.आर.होल्डे सहित अन्य ठेकेदारों पर समय पर वेतन भुगतान न करने और निर्देशों की अवहेलना के आरोप लगाए गए हैं।डब्ल्यूसीएल पाथाखेड़ा के क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय के एपीएम ललित प्रकाश तिर्की ने बताया कि ठेकेदारों को दो बार लिखित निर्देश जारी किए जा चुके हैं और वेतन भुगतान में और विलंब होने पर नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी। हालांकि मजदूरों का आरोप है कि नोटिस के बाद ठेकेदार आदेशों को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं।अब सवाल मजदूरों को न्याय या आंदोलन होगा और तेज ?स्थिति अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुकी है। एक ओर मजदूर अपने अधिकारों के लिए सड़क पर हैं,वहीं दूसरी ओर प्रबंधन और ठेकेदारों की कार्रवाई पर सबकी नजर टिकी हुई है।आने वाले दिनों में यह तय होगा कि मजदूरों का बकाया वेतन मिलेगा,या खदानों में नए मजदूरों से काम लिया जाएगा,अथवा प्रशासन हस्तक्षेप कर आंदोलन समाप्त करवाएगा।

फिलहाल पाथाखेड़ा क्षेत्र में होली के रंग फीके हैं क्योंकि मेहनतकश हाथों में गुलाल नहीं,बल्कि संघर्ष की काली स्याही नजर आ रही है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949